दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 गोरखपुर में आतिशबाजी के उत्साह ने चढ़ा दिया प्रदूषण का पारा

5 छठ पर ट्रेन टिकट-न नियमित ट्रेनों में बची जगह, न स्पेशल में सीटें खाली

8 टीम की सफलता के असली हीरो कप्तान रोहित

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 17 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 20 नवम्बर, 2023

थमा आपरेशन तमंचा तो गरजने लगे अवैध असलहे

गोरखपुर। एडीजी अखिल कुमार के आदेश पर दो साल पहले अवैध असलहों के खिलाफ अभियान चला। इसे ऑपरेशन तमंचा का नाम दिया गया। इसका असर भी रहा। कई बदमाश दबोचे गए और 2022 में गोरखपुर जोन में 4,132 असलहे भी बरामद कर लिए गए। ऑपरेशन तमंचा अभियान सुस्त पड़ा तो जिले में एक बार फिर अवैध असलहे गरजने लगे हैं। हरपुर बुदहट में हत्या हो या फिर गोरखनाथ में हवाई फायरिंग सभी में अवैध असलहा की बात सामने आई। खुद पुलिस ने आर्म्स एक्ट की धारा भी बढ़ा दी, लेकिन अवैध असलहों के इस्तेमाल की बात एक बार फिर सामने आ गई है। जबकि, पुलिस ने पूर्व में जब सख्ती की तो हत्या में भी लाठी–डंडा तक के इस्तेमाल के केस आते है। इसे आईजी जोन रविंद्र गौड़ ने गंभीरता से लिया है। खबर है कि आईजी ने ऑपरेशन तमंचा में की गई कार्रवाई की रिपोर्ट भी मांगी है।

जानकारी के मुताबिक, एडीजी अखिल कुमार के आदेश पर दो साल पहले अवैध असलहों के खिलाफ अभियान चला। इसे ऑपरेशन तमंचा का नाम दिया गया। इसका असर भी रहा। कई बदमाश दबोचे गए और 2022 में गोरखपुर जोन में 4,132 असलहे भी बरामद कर लिए गए। असलहा पकड़े जाने के बाद पुलिस ने दावा किया कि तस्करों के नेटवर्क को खंगाला जा रहा है। जल्द ही दबोचा जाएगा। लेकिन, ऐसा होता कभी नहीं।

इसे गंभीरता से लेते हुए नए साल की शुरुआत होते ही एडीजी ने ऑपरेशन तमंचा–2 चलाने का आदेश दिया। इसका मकसद है कि असलहा तस्करों को पकड़ा जाए, ताकि अवैध असलहे जिले में आने ही ना पाए, लेकिन इसकी भी शुरुआत में सिर्फ असलहों के इस्तेमाल करने वालों की गिरफ्तारी से हुई। लेकिन, अब तो न असलहा इस्तेमाल करने वाले पकड़े जा रहे हैं और न ही नेटवर्क के तह तक ही पुलिस पहुंच पा रही है।

पहले आठ सौ से 1,500 में बिकते थे तमंचे, अब 15 हजार तक

बात अगर, 2015 से पहले की करें तो तमंचा आठ सौ से 15 सौ में बिकते थे। गोरखपुर में बिहार से असलहा लाकर बेचा जाता था। पुलिस की सख्ती नहीं थी तो हर मुहल्ले में आसानी से मिल भी जाता था, लेकिन अब पुलिस की सख्ती बढ़ी है तो अब 15 हजार रुपये तक इसका दाम पहुंच गया। बेलघाट में पकड़े गए युवकों ने बताया था कि वह 12 हजार रुपये में तमंचा आजमगढ़ से लाते थे और फिर यहां पर 15 हजार रुपये में बेच दिया करते थे।

बिहार और आजमगढ़ से आते हैं तमंचे

गोरखपुर में बिहार और आजमगढ़ से तमंचों की खेप आती है। पुलिस प्रशासन की सख्ती बढ़ने के बाद अब बड़ी संख्या में एक साथ असलहे नहीं लाए जाते हैं। एक बार में दो या तीन असलहे ही लेकर लोग आते हैं और फिर उसे बेच दिया जाता है। इसकी पुष्टि हाल के दिनों में पकड़े गए लोगों से हो चुकी है। लेकिन, इस पर पुलिस की सख्ती नहीं हो पाती, तस्कर न दबोचे जाने की वजह से आवक कम तो हुई, लेकिन खत्म नहीं हो पाई।

अश्वनलाइन ग्रुप से खरीद-फरोख्त के मिले हैं प्रमाण

पुलिस ने अलग–अलग मामलों में चार युवकों को पकड़ा था, जिसके बाद यह पुष्टि हुई थी कि ऑनलाइन तमंचे के खरीद फरोख्त का बाजार चल रहा है। महाकाल, गुंडा है हम, अपनी बादशाहत नाम से चलने वाले ग्रुप में फोटो डाला जाता है और फिर उसके दाम तय कर बेचा जाता है। इस ग्रुप में विश्वसीनता ऐसी है कि कोई भी इसकी बातों को किसी भी ऐसे शख्स को नहीं बताता है, जिससे भंडाफोड़ हो। लेकिन, पुलिस ने पकड़ने के बाद सरगना आजमगढ़ का बताया था, लेकिन छह महीने का अधिक समय गुजरने के बाद भी वह पकड़ा नहीं जा सका।

साल 2022 में बरामद हुए असलहे

गोरखपुर 519
देवरिया 244
कुशीनगर 403
महराजगंज 176
बस्ती 368
संतकबीरनगर 309
सिद्धार्थनगर 501
गोंडा 709
बलरामपुर 287
बहराइच 464
श्रावस्ती 152

हरपुर–बुदहट इलाके के सुरैना गांव में लक्ष्मी प्रतिमा पंडाल में सोए मोनू निषाद (14) की दिवाली से दो दिन पहले रात में गोली मारकर हत्या कर दी गई। जबकि, बगल में सोया उसका दोस्त अजीत निषाद (15) गोली से घायल हो गया था। पुलिस ने आरोपी भोलू निषाद को गिरफ्तार कर हत्या में इस्तेमाल पिस्टल बरामद किया। वह अवैध था, पुलिस ने आर्म्स एक्ट की धारा बढ़ा दी।

गोरखनाथ इलाके के राजेंद्रनगर मोहल्ले में स्थापित लक्ष्मी प्रतिमा पंडाल के पास दिवाली की रात में मारपीट हुई। इस दौरान एक पक्ष ने दूसरे पर पक्ष पर फायरिंग करने का भी आरोप लगाया है। घटनास्थल से पुलिस को एक खोखा मिला है। अवैध असलहे की बात भी सामने आई। पुलिस की जांच अभी जारी है।

घटनाओं में अवैध असलहे के मामलों में पुलिस ने कार्रवाई की है। ऑपरेशन तमंचा अभियान को प्रभावी बनाने का आदेश जारी किया गया है। की गई कार्रवाई की समीक्षा भी की जाएगी।– जे रविंद्र, आईजी

छठ पूजा समारोह का दृश्य

सम्पादकीय

परमाणु-विरोधी आन्दोलन और विश्व संगठन तत्काल युद्धविराम के लिए काम करें

संयुक्त राज्य अमेरिका झूठे बहाने और अप्रमाणित सुबूतों के आधार पर इराक पर हमला करने में सबसे आगे था कि इराक के पास सामूहिक विनाश के हथियार थे परन्तु आज उसने इजरायली मंत्री के बयान पर चुप्पी साध ली है। अमेरिका हमेशा ईरान पर परमाणु हथियार रखने का आरोप लगाता रहा है, लेकिन अब जब इजराइली मंत्री ने खुलेआम परमाणु हथियार के इस्तेमाल की धमकी दी है, तो अमेरिकी सरकार और उसके सहयोगियों की चुप्पी परेशानकुन है। मौजूदा सदी में सबसे खराब किस्म का संकट है गाजा में मानवीय त्रासदी। लगभग 11000 लोग, जिनमें से 70 प्रतिशत महिलाएं और बच्चे हैं, उनमें से 40 प्रतिशत 15 साल से कम उम्र के बच्चे हैं, घनी आबादी वाले क्षेत्र में असंगत आक्रामकता और अभूतपूर्व बमबारी से मारे गये हैं। गाजा में हर 10 मिनट में एक बच्चे की मौत हो रही है। अस्पतालों और शरणार्थी शिविरों सहित अधिकांश बुनियादी ढांचे मलबे में तब्दील हो गये हैं। इस विनाश से संतुष्ट न होकर इजराइल के हेरिटेज मंत्री अमीचाईएलियाहू ने परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की धमकी दी।

हालांकि प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने उन्हें मंत्रिमंडल से हटा दिया है, जो महज एक धोखा है और खुद को चौतरफा आलोचना से बचाने के लिए उठाया गया कदम है। यह मानना नादानी होगी कि मंत्री का बयान इजराइली सरकार के आंतरिक हलकों में बिना किसी चर्चा के आया है। न तो प्रधानमंत्री नेतन्याहू और न ही किसी अन्य अधिकारी ने इजराइल के पास परमाणु हथियार होने से इनकार किया है। इससे पहले की अटकलों की पुष्टि हो गई है कि इजराइल एक परमाणु हथियार संपन्न देश है। गाजा पर इजराइली आक्रमण, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह 7अक्टूबर को इजराइल पर हमास के हमले के बाद प्रेरित हुआ था, वस्तुतरू फिलिस्तीनियों के जातीय सफाये में बदल गया है।

संयुक्त राज्य अमेरिका झूठे बहाने और अप्रमाणित सुबूतों के आधार पर इराक पर हमला करने में सबसे आगे था कि इराक के पास सामूहिक विनाश के हथियार थे परन्तु आज उसने इजरायली मंत्री के बयान पर चुप्पी साध ली है। अमेरिका हमेशा ईरान पर परमाणु हथियार रखने का आरोप लगाता रहा है, लेकिन अब जब इजराइली मंत्री ने खुलेआम परमाणु हथियार के इस्तेमाल की धमकी दी है, तो अमेरिकी सरकार और उसके सहयोगियों की चुप्पी परेशानकुन है। आईएईए ने भी एक शब्द नहीं कहा है। अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (आईसीसी) जिसके पास नरसंहार, मानवता के खिलाफ अपराधों जैसे अंतरराष्ट्रीय अपराधों के लिए व्यक्तियों पर मुकदमा चलाने का अधिकार है, अमेरिका के स्पष्ट समर्थन के साथ नेतन्याहू सरकार द्वारा हजारों बच्चों का नरसंहार देखने के बाद भी चुप है।

संयुक्त राज्य अमेरिका झूठे बहाने और अप्रमाणित सुबूतों के आधार पर इराक पर हमला करने में सबसे आगे था कि इराक के पास सामूहिक विनाश के हथियार थे परन्तु आज उसने इजरायली मंत्री के बयान पर चुप्पी साध ली है

यह दुख की बात है कि अमेरिका और उसके सहयोगियों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में इजराइल और फिलिस्तीन के बीच तत्काल युद्धविराम के जॉर्डन के प्रस्ताव के खिलाफ मतदान किया। भारत का मतदान से अनुपस्थित रहना इजराइली सरकार द्वारा हत्याओं को उचित ठहराने के समान है। इजराइल के प्रधानमंत्री पहले ही भारत के रुख की तारीफ कर चुके हैं। 7 अक्टूबर को हमास द्वारा किये गये हमले को उचित नहीं ठहराया जा सकता। लेकिन जैसा कि संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरस ने बताया है कि श्इजराइल पर हमास के हमले शून्य में नहीं हुएश। इजराइल और अमेरिका ने एक कहानी बनाई है कि इजराइल को अपनी रक्षा करने का अधिकार है, जबकि इतिहास भरा पड़ा है ऐसी घटनाओं से जब इजराइल ने न केवल फिलिस्तीनी भूमि पर कब्जा कर लिया है, बल्कि उन्हें बाहर धकेल दिया है और उन्हें राज्यविहीन नागरिक बना दिया है और इस प्रकार अंतरराष्ट्रीय कानून और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के दो राष्ट्र सिद्धांत को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया है, जैसा कि 1967 में संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस के हस्तक्षेप से इजराइल और फिलिस्तीन के बीच अपनाया गया था। अपने अपराधों को सही ठहराने के लिए हमलावरों द्वारा झूठी कहानियां गढ़ी जाती हैं। वे किसी न किसी बहाने से विपरीत का प्रदर्शन करते हैं। नाजियों ने जर्मनी की बुराइयों के लिए यहूदियों को दोषी ठहराया।

उन्होंने यह मिथक फैलाया कि जर्मनी प्रथम विश्व युद्ध में युद्ध के मैदान पर नहीं, बल्कि घरेलू मोर्चे पर विश्वासघात के कारण हारा था। यहूदियों, सोशल डेमोक्रेट्स और कम्युनिस्टों को जिम्मेदार ठहराया गया। युद्ध में यहूदियों की भूमिका के बारे में पूर्वाग्रह झूठे थे। एक लाख से अधिक जर्मन और ऑस्ट्रियाई यहूदियों ने अपनी पितृभूमि के लिए लड़ाई लड़ी थी। हिटलर ने उपरोक्त तथ्यों को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया और सामूहिक उन्माद पैदा करने और उनमें से 60 लाख से अधिक को खत्म करने के लिए यहूदियों के खिलाफ झूठी कहानी का इस्तेमाल किया।

ऐसे कट्टरपंथी अपनी श्रेष्ठ जाति होने की बात भी करते हैं और सबको अपने अधीन करने के अधिकार को उचित ठहराते हैं, यहां तक कि श्निचले लोगोंश को खत्म भी कर देते हैं। चर्चिल के भी ऐसे ही विचार थे। 1937 में, उन्होंने फिलिस्तीन रॉयल कमीशन से कहारू श्उदाहरण के लिए, मैं यह स्वीकार नहीं करता कि अमेरिका के रेड इंडियंस या ऑस्ट्रेलिया के काले लोगों के साथ बहुत बड़ा गलत किया गया है। मैं यह स्वीकार नहीं करता कि इनके साथ कोई गलत काम किया गया है।श लोग इस तथ्य से सहमत हैं कि एक मजबूत जाति, एक उच्च श्रेणी की जाति, इसे इस तरह से कहें तो एक अधिक सांसारिक बुद्धिमान जाति ने आकर उनकी जगह ले ली है।श

1943 में, भारत, जो उस समय भी ब्रिटिश आधिपत्य में था, ने बंगाल के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में विनाशकारी अकाल का अनुभव किया। माना जाता है कि कम से कम तीस लाख लोग मारे गये थे। चर्चिल ने अकाल के लिए भारतीयों को दोषी ठहराया और दावा किया कि वे श्खरगोशों की तरह प्रजनन करते हैंश। हालांकि सच्चाई यह है कि बंगाल के लोगों के लिए जो भोजन उपलब्ध था उसे बर्मा में ब्रिटिश सेना को भेज दिया गया था। 1994 में रवांडा में हुतु शासक जनजातियों ने तुत्सी अल्पसंख्यक के खिलाफ नफरत फैलाई, जिससे केवल 100 दिनों में आठ लाख लोग मारे गये।

1947 में विभाजन के दौरान भारत को एक गंभीर मानवीय संकट का सामना करना पड़ा जिसमें कट्टरपंथियों द्वारा 25 लाख हिंदू, मुस्लिम और सिखों को मार डाला गया। दुर्भाग्य से अल्पसंख्यक विरोधी बयानबाजी वर्तमान में यहां फैल रहा है क्योंकि हम देख रहे हैं कि केंद्र में सत्तारूढ़ व्यवस्था के खुले समर्थन से हिंदू कट्टरपंथियों द्वारा अल्पसंख्यकों, विशेषकर मुसलमानों को दानव की तरह पेश या वर्णित किया जा रहा है।

हमें समझना होगा कि जायोनीवाद को यहूदियों से, नाजीवाद को जर्मनों से और हिंदुत्व (हिंदू कट्टरवाद) को हिंदुओं से अलग करना होगा। सभी मुसलमानों को आतंकवादी नहीं माना जा सकता। ऐसी विचारधारा विनाशकारी हो सकती है और केवल युद्ध फैलाने वालों के लिए उपयोगी हो सकती है। इसलिए इजराइली विरासत मंत्री के बयान को गंभीरता से लेना होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें दुनिया की प्रतिक्रिया देखने के लिए बोलने के लिए कहा गया था। अमेरिका सैन्य औद्योगिक परिसर के निर्माण और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में युद्ध पैदा करके अपने आर्थिक संकट को हल करने की कोशिश कर रहा है। नाटो पहले से ही एशिया के दरवाजे पर है। क्वैड और एयूसीकेयूएस जैसे संगठन एशिया प्रशांत क्षेत्र में शांति के लिए खतरा हैं।? लोगों की आवाज शांति के लिए है। तत्काल युद्ध विराम के लिए दुनिया भर में भारी विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। तत्काल युद्धविराम के लिए दक्षिण अफ्रीका की शांति योजनाएं बहुत उपयुक्त हैं और इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए। इस समय परमाणु–विरोधी आंदोलन को और अधिक मुखर होना होगा।

पटाखे, आस्था और संघ परिवार

वायु प्रदूषण के खिलाफ हिंदू आस्थाएं किसी प्रकार के कवच या मास्क का काम करने वाली हों और वायु प्रदूषण के दुष्प्रभावों से हिंदू बचे रह जाने वाले हों

वायु प्रदूषण के खिलाफ हिंदू आस्थाएं किसी प्रकार के कवच या मास्क का काम करने वाली हों और वायु प्रदूषण के दुष्प्रभावों से हिंदू बचे रह जाने वाले हों! वर्ना सामान्य ज्ञान तो यही कहता है कि हिंदू अगर आबादी का 80 फीसद से ज्यादा हिस्सा हैं, तो कुल मिलाकर वायु प्रदूषण के नुकसान में भी उतना ही ज्यादा उनके हिस्से में आएगा! यह हिंदू आस्था का सवाल हो न हो हिंदू आस्थाओं को आत्मघाती बनाने का मामला जरूर है। वैसे तो प्रकृति से जुड़ी आपदाओं में से अधिकांश के पीछे किसी न किसी प्रकार से इंसानों की करनियों का हाथ रहता ही है। जलवायु परिवर्तन से जुड़ी आपदाएं इसका जाना–माना उदाहरण हैं। फिर भी, आम तौर पर देश भर में और खासतौर पर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र को दीवाली की रात से वायु प्रदूषण के जिस संकट को झेलना पड़ रहा है, उसके पीछे जितने प्रत्यक्ष रूप से इंसानों की करनी है, उसका स्तर अलग ही है। वास्तव में इसे आत्मघाती करनी कहा जाए, तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। और जैसे खासतौर पर इसी सच्चाई को रेखांकित करने के लिए, इस बार की दीवाली से दो दिन पहले से, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और उससे भी व्यापक दायरे में, अप्रत्याशित बारिश ने वातावरण को असामान्य रूप से साफ कर दिया था। याद रहे कि इससे पहले, करीब हफ्तेभर से इस क्षेत्र में वायु प्रदूषण श्खतरनाकश स्तर पर बना रहा था, जिस पर अंकुश लगाने की कोशिश में राजधानी दिल्ली समेत इस क्षेत्र की विभिन्न सरकारों ने अनेक आपात कदम उठाए थे, जिनमें निर्माण गतिविधियों पर अंकुश लगाने, वाहनों के धुंए के प्रदूषण को कम करने से लेकर, स्कूलों को बंद करने तक के कदम शामिल थे।

यही नहीं, पिछले कुछ वर्षों की तरह, एक बार फिर पंजाब, हरियाणा आदि में किसानों के पराली जलाने से होने वाले वायु प्रदूषण का मुद्दा प्रमुखता से चर्चा आया था और सुप्रीम कोर्ट तक ने इस मुद्दे पर हस्तक्षेप करना जरूरी समझा था। इसी संकट के पराली से जरा भिन्न संदर्भ में, दीवाली के गिर्द आतिशबाजी के सिलसिले में भी सुप्रीम कोर्ट ने हस्तक्षेप किया था और उसने न सिर्फ राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में पटाखों पर लगी पाबंदी को सही और जरूरी ठहराते हुए, इस पाबंदी को चुनौती देने वाली याचिकाओं को खारिज किया था, बल्कि इसे लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा के तकाजों से जोड़ते हुए, हरित–इतर पटाखों पर पाबंदी का देशभर में विस्तार करना भी जरूरी समझा था। इस सब के बीच प्रकृति ने इस क्षेत्र में अचानक बेमौसमी बारिश के रूप में जो उदारता दिखाई थी, उसके बल पर इस बार दीवाली के दिन शाम तक वातावरण असाधारण रूप से साफ था और एक्यूआई सूचकांक, पिछली अनेक दीवालियों की शामों के मुकाबले, वायु प्रदूषण बहुत कम दिखा रहा था। लेकिन तभी तक, जब तक कि आम तौर पटाखे चलना शुरू नहीं हुआ था।

दीवाली पर देर शाम से पटाखे चलने का जो सिलसिला शुरू हुआ, उसने सुप्रीम कोर्ट के आदेश की धज्जियां तो खैर उड़ाईं सो उड़ाईं, बारिश के जरिए प्रकृति द्वारा दमघोंटू वातावरण से दिलाई गई राहत की भी धज्जियां उड़ा दीं। नतीजा यह हुआ कि दीवाली की अगली सुबह से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वायु प्रदूषण, फिर से बारिश से पहले के खतरनाक स्तर पर ही नहीं पहुंच गया, उस खतरनाक स्तर की भी एकाध सीढ़ी और चढ़ गया। इस क्षेत्र में एक्यूआई औसतन 500 अंक से ऊपर पहुंच गया।

बहरहाल, बात सिर्फ इतनी ही होती तब भी गनीमत थी। इसे अपने हाथों, अपने लिए मुसीबत खड़ी करने की मूर्खता का मामला कहकर, ऐसा करने वालों की नादानी पर रोया जा सकता था। वैसे, इस नादानी पर रोना भी, कुछ कारणों से साधारण रोना भर नहीं होता। एक तो इसलिए कि यह नादानी कोई अनजाने में नहीं की जा रही थी। कम से कम आम तौर पर सभी को इसका कुछ न कुछ अंदाजा जरूर हो चुका है कि गंगा–जमुना के मैदान की, सर्दियों में वातावरण के खराब होने की जो प्राकृतिक समस्या है, उसे दीवाली के गिर्द खतरनाक रूप से बढ़ाने में, जिस तरह मोटर वाहनों के धुंए का और पराली जलाने के धुंए का महत्वपूर्ण योगदान है, उसी तरह समय विशेष पर पटाखों के धुंए का भी महत्वपूर्ण योगदान है। जब वायु प्रदूषण को खतरनाक स्तर से नीचे लाने के लिए दूसरे सभी उपाय आजमाए जा रहे हों या कम से कम उनके बारे में सोचा जा रहा हो, श्खुशी जतानेश के लिए पटाखे चलाने से बचे जाने के लिए, सामान्य ज्ञान से ज्यादा की जरूरत नहीं होनी चाहिए।

इस सिलसिले में यह याद दिलाने की भी जरूरत नहीं होगी कि पटाखे चलाने से बचे जाने की यह मांग कोई अचानक नहीं आ गई थी। इस क्षेत्र में वायु प्रदूषण के संकट पर चर्चा ने जब से जोर पकड़ा है, तभी से इस समस्या के एक हिस्से के तौर पर पटाखे चलाए जाने को हतोत्साहित करने के विवेक का भी प्रचार–प्रसार हुआ है। यहां तक कि सरकारों द्वारा और उच्चतर अदालतों द्वारा भी पटाखों पर बढ़ते पैमाने पर रोक भी लगाई जाती रही है। इसी सिलसिले की ताजातरीन कड़ी के तौर पर सुप्रीम कोर्ट ने गैर–हरित पटाखों पर पाबंदी को विस्तार कर, पूरे देश पर लागू कर दिया था। और यह विस्तार भी पूरी तरह से विवेकपूर्ण था क्योंकि दीवाली पर श्खुशी से पटाखेश चलाने का रिवाज, तेजी से देश के बड़े हिस्से में फैला है और उसका गंगा–यमुना के मैदानी इलाके के बाहर के अनेक प्रमुख शहरी केंद्रों में भी वायु प्रदूषण का संकट बढ़ाने में काफी योगदान रहा है। यह संयोग ही नहीं है कि इस बार दीवाली की अगली सुबह, दुनिया के दस सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण के मारे महानगरों में, दिल्ली के अलावा मुंबई और कोलकाता भी शामिल हो चुके थे!

तो क्या सब के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाते हुए भी श्खुशी के पटाखेश चलाने की इस जिद को सिर्फ एक धार्मिक आस्था का और इस धार्मिक आस्था के विवेक के खिलाफ जाने से, इसे सिर्फ धार्मिक अंधविश्वास का मामला माना जा सकता है। हर्गिज नहीं। बेशक, बड़े पैमाने तथा व्यापक स्तर पर पटाखे चलाए जाना, दीवाली से जुड़ा हुआ है, हालांकि खुशी में पटाखे चलाना न तो दीवाली तक सीमित है और न ही ऐसे धर्म से जुड़े त्यौहारों तक ही सीमित है। शादी–विवाह से लेकर, चुनावी जीत और राष्ट्रीय त्यौहारों तक के मौके पर, आतिशबाजी खुशी जताने का एक स्वीकृत साधन रही है। दूसरी ओर, पटाखों के औद्योगिक पैमाने पर उत्पादन के साथ आधुनिक दौर में दीवाली के मौके पर पटाखे चलाना आम जरूर हो गया है, लेकिन गंधक–बारूद के उपयोग से विस्फोटक बनाए जाने का इतिहास, इतना पुराना भी नहीं है कि पटाखों को, दीवाली से जुड़ी धार्मिक आस्था का जरूरी अंग या तत्व माना जा सके। दीवाली से जुड़े अनेक विश्वास, कम से कम सातवीं सदी में चीन से पटाखों के आने से पुराने जरूर होंगे। बेशक, धार्मिक आस्थावान, अपने विश्वासों को आसानी से छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता है, इसके लिए उन्हें विवेक की कसौटी पर कसने से बचता भी हैय लेकिन उन्हें अविवेकपूर्ण मानते हुए उनका बचाव शायद ही करता है। उल्टे अविवेकपूर्ण नजर आने की सूरत में धीरे–धीरे किंतु निश्चित रूप से उनका त्याग ही करता है।

लेकिन धार्मिक आस्था के विपरीत, धर्म का लबादा ओढ़कर सामने आने वाली राजनीतिक आस्था या सांप्रदायिकता का आचरण इससे बहुत भिन्न होता है। वह चूंकि धार्मिक आस्थाओं का सांप्रदायिक राजनीति को आगे बढ़ाने के लिए ही उपयोग करती है, वहां धार्मिक आस्थाओं में काट–छांट तो खूब होती है, इतनी ज्यादा की धार्मिक आस्थाएं ही पहचान में नहीं आएंय लेकिन धर्म की दुहाई की यह राजनीति कथित आस्थाओं में किसी भी तरह से, विवेक प्रवेश नहीं होने देती है। उल्टे, विवेक के विरुद्घ इन कथित आस्थाओं को अपना हथियार ही बनाती है। दीवाली से जोड़कर पटाखों के सवाल पर, संघ परिवार के औपचारिक नेतृत्व को छोड़कर, उसकी तमाम सेनाओं की जो हमलावर नकारात्मक भूमिका रही है, उसे महज धार्मिक आस्था से बहुत भिन्न, इस सांप्रदायिक राजनीति के रूप में ही समझा जा सकता है।

अमेरिकी और पश्चिमी राजनयिक बांग्लादेश में खुलकर कर रहे हैं विपक्ष का समर्थन

बांग्लादेशी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर उत्साही बहसों की वर्तमान बयानबाजी और विशेषज्ञों द्वारा लिखे गये लेखों के स्वर से यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिमी देशों का गुट निरूसंकोच अवामीलीग विरोधी विपक्षी अभियान का समर्थन कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था में लगातार गिरावट ने अमेरिका के साथ उसके असहज संबंधों में वर्तमान तनाव को बढ़ा दिया है। इसने सत्तारूढ़ अवामीलीग (एएल) की स्थिति को राजनीतिक रूप से और अधिक कमजोर कर दिया है ऐसे समय जब यह 2024 के संसदीय चुनावों के लिए अपना चुनाव पूर्व अभियान चला रही है।

बांग्लादेशी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर उत्साही बहसों की वर्तमान बयानबाजी और विशेषज्ञों द्वारा लिखे गये लेखों के स्वर से यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिमी देशों का गुट निरूसंकोच अवामीलीग विरोधी विपक्षी अभियान का समर्थन कर रहा है। हाल के महीनों में पश्चिमी राजनयिकोंध्नेताओं की बांग्लादेश की बार–बार यात्राएं, आमतौर पर एएल सरकार से स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए अधिक श्पारदर्शीश उपाय अपनाने का आग्रह करना, एएल–संचालित प्रशासनके बारे में उनके बमुश्किल छिपे हुए अविश्वास का एक संकेत है।

गौरतलब है कि बांग्लादेश में हाल ही में लिए गए प्रशासनिक निर्णयों की तथाकथित श्उदारवादीश पश्चिमी आलोचना का जोर उन मुद्दों पर भी केंद्रित है जो स्पष्ट रूप से राजनीतिक नहीं हैं। उदाहरण के लिए कपड़ा उद्योग के श्रमिकों द्वारा उठाई गई वेतनवृद्धि की मांगों से जिस तरह से आधिकारिक तौर पर निपटा जा रहा है और बांग्लादेश की सरकार नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री डॉ मोहम्मद यूनुस की आर्थिक परियोजनाओं और नीतियों के खिलाफ जिस ढंग से मुखालफत कर रही है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि सत्ताधारी एएल नेताओंध्मंत्रियों ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्हें लगता है कि ऐसे कदम बांग्लादेश की घरेलू राजनीतिध्शासन में सीधे हस्तक्षेप से कम नहीं हैं। बांग्लादेश सरकार ने सेवारत राजनयिकों को चेतावनी देना आवश्यक समझा है कि ऐसी गतिविधियों को प्रायोजित करनाध्भाग लेना आवश्यक रूप से समय–सम्मानित राजनयिक व्यवहार का हिस्सा नहीं है। कोई आश्चर्य नहीं कि कुछ पर्यवेक्षकों को लगता है कि वर्तमान में, जब मुठ्ठी भर बांग्लादेशी अधिकारियों को पहले से ही अमेरिका द्वारा लगाये गये प्रतिबंधों के तहत रखा गया है, तो ऐसा लगता है कि सत्तारूढ़ एएल जो कुछ भी करता है उसे मुख्यधारा के पश्चिमी उदारवादी प्रेस द्वारा सकारात्मक दृष्टि से नहीं देखा जायेगा। पश्चिम में आम सहमति यह है कि आगामी चुनावों के बारे में ढाका में दी गई आधिकारिक घोषणाओं और आश्वासनों के बावजूद, विपक्षी कथा को पूरी तरह से स्वीकार किया जाना चाहिए।

बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के नेतृत्व वाले विपक्ष द्वारा भेजा गया व्यापक राजनीतिक संदेश यह है कि एएल ने अपनी अच्छी तरह से प्रचारित चुनाव श्जीतश सुनिश्चित करने के लिए अपने अभियान में व्यापक धमकीधहिंसा का सहारा लेकर हमेशा चुनावों में धांधली की है। विडंबना यह है कि ठीक इसी तरह के आरोप बीएनपी के खिलाफ उसकी पिछली चुनावी जीत के दौरान भी लगाये गये थे।

गोरखपुर विश्वविद्यालय में बढ़ेंगे पढ़ाई के दिन

गोरखपुर। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० के अंतर्गत विद्यार्थियों के समग्र विकास पर जोर दिया गया है। इसे सुनिश्चित करने के लिए अधिक शैक्षणिक कार्य दिवस की आवश्यकता है जिसमें शिक्षण के साथ शैक्षणिक और खेलकूद की गतिविधियों को विश्वविद्यालय में संचालित किया जा सके। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दिन बढ़ाने के उद्देश्य से निर्धारित ५२ दिन के अवकाश को घटाकर २६ दिन करने की तैयारी की जा रही है ताकि शैक्षणिक सत्र में १८० दिन कक्षाओं का संचालन सुनिश्चित किया जा सके। वहीं प्रत्येक सेमेस्टर में ६० दिन शिक्षण कार्य दिवस सुनिश्चित करने पर जोर दिया जा रहा है। इस दिशा में विश्वविद्यालय प्रशासन ने कार्य शुरू कर दिया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० के अंतर्गत विद्यार्थियों के समग्र विकास पर जोर दिया गया है। इसे सुनिश्चित करने के लिए अधिक शैक्षणिक कार्य दिवस की आवश्यकता है जिसमें शिक्षण के साथ शैक्षणिक और खेलकूद की गतिविधियों को विश्वविद्यालय में संचालित किया जा सके। इसे ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन ने मिड-सेमेस्टर की परीक्षाओं को समाप्त कर दिया। मिड सेमेस्टर परीक्षाएं कराने में २१ दिन लगता था। ऐसे में मिड और एंड टर्म की सेमेस्टर परीक्षाएं कराने में शैक्षणिक सत्र में करीब ४० दिन लगते थे जिससे शैक्षणिक कार्य प्रभावित होता था। इसके साथ ही गोरखपुर विश्वविद्यालय छुट्टियों को भी तार्किक करने जा रहा है और

अनावश्यक अवकाश समाप्त करने पर विचार कर रहा है। यूजीसी के अनुसार एक शैक्षणिक सत्र में कम से कम १८० दिन शिक्षण कार्य होने चाहिए। प्रदेश के अन्य विश्वविद्यालयों की तुलना में गोरखपुर विश्वविद्यालय में सबसे अधिक ५२ दिन का अवकाश तय है। जबकि राज्य सरकार के आदेश के अनुसार सिर्फ २६ दिन अवकाश होना चाहिए। लखनऊ विश्वविद्यालय तथा मेरठ विश्वविद्यालय में वर्तमान सत्र में २६ दिन ही अवकाश होता है। ऐसे में अवकाश की सूची को तर्कसंगत बनाया जा रहा है, जिससे छात्रों को कम से कम एक सेमेस्टर में ६० शिक्षण कार्य दिवस मिलना सुनिश्चित हो। ताकि पाठ्यक्रम समय से पूरा किया जा सके, विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए गतिविधियों को संचालित करने का अवसर मिले तथा परीक्षा कराकर परिणाम समय से घोषित किए जा सके।

कर्मचारियों को मिलेगा सेकेंड सेमेस्टर का अवकाश

विश्वविद्यालय में गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों को महीने के दूसरे शनिवार को छुट्टी प्रदान की जाएगी। हालांकि उस दिन शैक्षणिक कार्य जारी रहेगा। इस दौरान जो कर्मचारी विभाग में कार्य करेंगे उन्हें प्रतिकर अवकाश देने की व्यवस्था की जाएगी।

दिवाली के अवकाश में की गई कटौती

गोरखपुर विश्वविद्यालय में दिवाली का अवकाश पहले ८ से १५ नवंबर तक सुनिश्चित था। इस लंबी छुट्टी की जानकारी होने पर कुलपति ने तीन दिन की कटौती कर ११ से १५ नवंबर तक अवकाश करने का निर्देश जारी किया। गोविवि कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि यूजीसी की गाइडलाइन के अनुसार शैक्षणिक सत्र में १८० दिन शैक्षणिक कार्य दिवस सुनिश्चित किया जाएगा। प्रत्येक सेमेस्टर में ६० दिन कक्षा का संचालन कराने पर जोर दिया जाएगा। इसको लेकर विश्वविद्यालय में पूर्व निर्धारित ५२ दिन के अवकाश की समीक्षा कर घटाने की तैयारी की जा रही है।

गोरखपुर में आतिशबाजी के उत्साह ने चढ़ा दिया प्रदूषण का पारा

गोरखपुर में त्योहार में लोगों के आतिशबाजी का उत्साह भारी पड़ गया। दीपावली पर शहर से लेकर गांव तक युवाओं व बच्चों ने जमकर आतिशबाजी की। इस दौरान एक्यूआइ 194 से 243 हुआ तो पीएम10 245.82 से बढ़कर 293.35 तक पहुंच गया। हालांकि बीते वर्ष 2022 के दीपावली के आंकड़ों के मुकाबले इस वर्ष के आंकड़े कुछ हद तक सुकून देने वाले हैं।

गोरखपुर। दीपावली पर आतिशबाजी के उत्साह ने एक बार फिर शहर के प्रदूषण का पारा चढ़ा दिया। दीपावली के पहले और उसके बाद रिकार्ड किए गए प्रदूषण आकड़ें इसका प्रमाण हैं। पीएम१० में अगर अतिशबाजी के चलते अप्रत्याशित बढ़ोतरी हुई तो शहर का एक्यूआइ भी इसी वजह से खतरनाक स्तर तक चढ़ गया। हालांकि बीते वर्ष २०२२ के दीपावली के आंकड़ों के मुकाबले इस वर्ष के आंकड़े कुछ हद तक सुकून देने वाले हैं। अगर बीते वर्ष के मुकाबले इस वर्ष के आंकड़ों का तुलनात्मक करें तो सतर्कता को लेकर हल्की लापरवाही सामने आई है। यह आंकड़े लापरवाही के प्रति सतर्कता के साथ-साथ जागरूकता का सबक भी दे रहे हैं।

मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के आचार्य और पर्यावरणविद् प्रो. गोविंद पांडेय के निर्देशन में विश्वविद्यालय के शोधार्थी सत्येंद्र नाथ यादव ने दीपावली के बाद बढ़े प्रदूषण के जो आंकड़े जुटाए, वह उत्साह पर नियंत्रण को लेकर सतर्क करने वाले हैं। उन्होंने बताया कि सर्वाधिक बढ़ोतरी पीएम१० और एक्यूआइ में पाई गई।

दीपावली से पहले जो एक्यूआइ १६४ माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर था वह पर्व पर आतिशबाजी के बाद २४३ तक पहुंच गया। इसी तरह पीएम१० भी २४५.८२ से बढ़कर २६३.३५ तक पहुंच गया। बीते वर्ष की बात करें तो दीपावली से पहले जहां एक्यूआइ ८१ थी, वहीं आतिशबाजी के बाद बढ़कर २४७ तक पहुंच गई थी।

इसी तरह पीएम१० ८०.८६ से बढ़कर २६७.१६ तक पहुंच गया था। वर्ष २०२२ से पहले दीपावली पर प्रदूषण बढ़ने के आंकड़ों पर गौर करें तो वह कुछ हद तक संतुलित रहा था पर उसके पीछे की वजह कोरोना संक्रमण थी, लोगों के उत्साह में कमी नहीं। सुकून भरी एक बात यह भी है कि आतिशबाजी की वजह से एसओ२ और एनओ२ का आंकड़ा बहुत प्रभावित नहीं हुआ।

इस बार दीपावली में ऐसे बढ़ा प्रदूषण (दीपावली–12 नवंबर)

तिथि	पीएम10	एसओ2	एनओट2	एक्यूआइ
11 नवं.	245.82	35.27	1.84	194
12 नवं.	264.87	08.75	1.12	215
13 नवं.	293.35	17.51	1.78	243

2022 में दीपावली पर बढ़े प्रदूषण का आंकड़ा (दीपावली–24 अक्टूबर)

20 अक्टू.	80.89	06.94	16.85	81
24 अक्टू.	121.47	06.87	20.48	116
27 अक्टू.	297.19	06.98	23.13	247

2021 में दीपावली पर बढ़े प्रदूषण का आंकड़ा (दीपावली– 04 नवंबर)

01 नवं.	287.42	06.37	17.	87 231
04 नवं.	281.67	08.32	20.64	232
08 नवं.	244.70	08.84	24.18	245

2020 में दीपावली पर बढ़े प्रदूषण का आंकड़ा (दीपावली– 14 नवंबर)

09 नवं. 185.27 05.74 13.69 157
12 नवं. 193.48 05.94 13.87 162
16 नवं. 201.23 07.08 17.28 267

2019 में दीपावली पर बढ़े प्रदूषण का आंकड़ा (दीपावली–27 अक्टूबर)

21 अक्टू.	276.22	13.18	26.84	226
24 अक्टू.	278.65	13.27	27.53	229
28 अक्टू.	317.29	15.11	28.91	267

क्या कहते हैं अधिकारी

पर्यावरणविद् प्रो. गोविंद पांडेय ने कहा कि आतिशबाजी के दौरान पटाखों से निकलने वाली गैसें वायुमंडल में पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ देती हैं। इससे आक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है। पटाखों की वजह से हानिकारक गैसों की मात्रा वायुमंडल में बढ़ जाती है, जो लंबे समय तक बनी रहती है। ऐसे में हमारे स्वास्थ्य पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। खासकर सांस के मरीजों के लिए खासी दिक्कत हो जाती है।

मौसम विज्ञानी कैलाश पांडेय ने बताया कि बीते वर्ष की दीपावली के मुकाबले लोगों ने इस वर्ष आतिशबाजी कम की है। आंकड़े इस बात के गवाह हैं। पर लोगों ने थोड़ा और ध्यान दिया होता तो स्थिति और बेहतर होती। एक्युआइ का २४३ होना भी पर्यावरण के लिहाज से ठीक नहीं है। ऐसे में आतिशबाजी को लेकर और सतर्कता बरतने की जरूरत है। इसे लेकर संकल्पित होने से ही बात बनेगी।

एक्यूआइ का मानक

0–50 : अच्छा
51–100 : संतोषजनक
101–200 : सांस लेने में थोड़ी कठिनाई
201–300 : सांस लेने में तकलीफदेह स्थिति
301–400 : अत्यंत खराब स्थिति
401 से ऊपर : हर किसी के लिए भयावह स्थिति ।

प्रतिमा विसर्जन यात्रा के दौरान बवाल, पुलिस ने प्रयोग किया हल्का बल

प्रतिमा विसर्जन के यात्रा के दौरान रेती चौक पर स्कूटी सवार युवती को टक्कर मारने पर विवाद शुरू हो गया। युवती ने पुलिस से शिकायत की तो पुलिस ने हल्का बल प्रयोग किया। जिससे नाराज लोगों ने बवाल शुरू कर दिया। जिसके बाद पुलिस की भारी फोर्स मौके पर पहुंच गई। 40 मिनट तक चले हंगामें के बाद प्रतिमाएं विसर्जन को ले जाई गई।

गोरखपुर। कोतवाली के रेती चौक पर प्रतिमा विसर्जन के यात्रा के दौरान बवाल हो गया। आरोप है कि एक युवक स्कूटी सवार युवती से टकरा गया। युवती की शिकायत पर पुलिस ने युवक पर हल्का बल प्रयोग कर दिया। इसके बाद यात्रा में शामिल युवक प्रदर्शन करने लगे। पुलिस ने लाठी पटककर भीड़ को तितर-बितर किया। करीब ४० मिनट बाद मामला शांत हुआ तो प्रतिमाओं को ले जाया गया।

यह है पूरा मामला

बुधवार की रात ११:३० बजे शहर के अंदर लगीं प्रतिमाएं रेती चौक होते हुए राजघाट की तरफ ले जाई जा रही थीं। हांसूपुर में स्थापित प्रतिमा भी उसी रास्ते ले जाई जा रही थी। इसी बीच एक युवती उधर से स्कूटी से गुजर रही थी। युवती का आरोप है कि विसर्जन यात्रा के दौरान एक युवक उससे टकरा गया और अपशब्द कहते हुए थप्पड़ जड़ दिया। युवती ने चौराहे पर खड़े पुलिस के जवानों से शिकायत की। पुलिस द्वारा युवक पर हल्का बल का प्रयोग करने पर यात्रा में शामिल लोग नाराज हो गए और प्रदर्शन करने लगे।

कुछ ही देर बाद एसएसपी डा. गौरव ग्रोवर के निर्देश पर एसपी सिटी ष्ण कुमार बिश्नोई के नेतृत्व में कैंट, रामढ़ताल समेत अन्य थानों की पुलिस मौके पर पहुंच गई। उधर, प्रदर्शन की वजह से पीछे से लाई जा रहीं प्रतिमाओं की लंबी लाइन लग गई।

भीड़ को हटाने के लिए पुलिस ने लाठी भांजी। इसमें कुछ लोग चोटिल भी हुए। वहीं मेला देखने के लिए किनारे बैठी महिलाओं ने आरोप लगाया कि पुलिस ने उन पर भी बल प्रयोग किया। इससे उनके साथ आए बच्चे भी चोटिल हो गए। एसपी सिटी ष्ण कुमार बिश्नोई ने बताया कि मामला शांत हो गया है। कुछ युवकों की बदमाशी है। जांच की जा रही है।

गोरखनाथ में भी प्रतिमा को लेकर दो पक्षों में विवाद

प्रतिमा विसर्जन कर लौट रहे तीन युवकों को रास्ते में रोककर एक समुदाय के लोगों ने पीट दिया। इससे नाराज पीड़ित युवकों के साथ पहुंचे लोगों ने हंगामा शुरू कर दिया और विपक्षी के साथ मारपीट शुरू कर दी। सूचना पर पहुंची गोरखनाथ पुलिस ने मामले को शांत कराया और कुछ युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। एसपी सिटी ने बताया कि मामला शांत है। कुछ युवकों से पूछताछ की जा रही है।

गोरखपुर-करीब 80 हजार लोग हैं सांस संबंधी रोगों की चपेट में

गोरखपुर। चेस्ट फिजिशियन डा नदीम अरशद ने बताया कि बीमारी से होने वाली मौत का तीसरा सबसे बड़ा कारण सांस सबंधी रोग हैं। धूम्रपान और प्रदूषण से इसके मरीजों की संख्या में तेजी से बढ़ रही है। बचपन में कम विकसित फेफड़े वाले मरीजों में सीओपीडी होने का खतरा सबसे अधिक होता है। महानगर में बिगड़े प्रदूषण के कारण क्र निक आब्स्टेक्ट्री पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) के मरीजों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। जिले में करीब ८० हजार लोग सांस सम्बन्धी बीमारियों की चपेट में हैं। यह कहना है चेस्ट फिजिशियन डा अजय श्रीवास्तव और डा एसपी राय का। बुधवार को दोनों डाक्टरों ने विश्व सीओपीडी दिवस के अवसर पर पत्रकारों से बातचीत में बताया कि बीते एक साल में सीओपीडी के मरीजों की संख्या में करीब २५ फीसदी का इजाफा हुआ है। हवा में प्रदूषण की मात्रा बढ़ने से लोगों की दिक्कत बढ़ी है। धूम्रपान तो केवल बड़ों को प्रभावित कर रहा है लेकिन प्रदूषण नवजातों को भी नहीं छोड़ रहा है। जिले में ८० हजार लोगों के सीओपीडी से ग्रसित होने का अनुमान है।

मौत का तीसरा सबसे बड़ा कारण

चेस्ट फिजिशियन डा नदीम अरशद ने बताया कि बीमारी से होने वाली मौत का तीसरा सबसे बड़ा कारण सांस सबंधी रोग हैं। धूम्रपान और प्रदूषण से इसके मरीजों की संख्या में तेजी से बढ़ रही है। बचपन में कम विकसित फेफड़े वाले मरीजों में सीओपीडी होने का खतरा सबसे अधिक होता है।

बीआरडी में किया गया मरीज को जागरूक

बीआरडी मेडिकल कालेज के टीबी चेस्ट विभाग में बुधवार को जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में ओपीडी में पहुंचे मरीज व तीमारदारों को जागरूक किया गया। विभागाध्यक्ष डा . अश्वनी मिरा ने बताया कि इस कार्यक्रम में मरीज और तीमारदारों को सीओपीडी से बचाव की जानकारी देने वाले पम्पलेट बांटे गए। इसके अलावा डिस्प्ले बोर्ड और टीवी स्क्रीन लगाकर सीओपीडी के खतरे को बताया गया।

अपने अजीज दोस्त की शादी में सुब्रत राय खुद बन गए थे ड्राइवर देश के प्रति थी अटूट आस्था

गोरखपुर। सुब्रत राय के जीवन की पहली कार फिएट थी। यह कार उन्होंने मुंबई से खरीदी और खुद चलाते हुए गोरखपुर लाए थे। उसी रात होटल विवेक में अपने दोस्तों को रात्रिभोज दिया था। इस दावत में तत्कालीन समय में उनके सारे दोस्त शामिल हुए थे। उस समय की ये पार्टी भी उनके जानने वालों के लिए यादगार बन गई थी। फर्श से अर्श तक पहुंचने वाले सहारा समूह के संस्थापक सुब्रत रॉय अपने उन साथियों को कभी नहीं भूले जो उनके संघर्ष के दिनों के साथी थे। बात वर्ष १९९२ की है, मेरी शादी में जिस गाड़ी से मैं जा रहा था वह खुद उसके ड्राइवर बन गए। सचमुच वह यारों के यार थे। उनके निधन से मेरे जैसे बहुत सारे लोगों को गहरा आघात लगा है, जिनसे उनका हमेशा जुड़ाव रहा।

यह कहना है रुद्रपुर के पूर्व विधायक अनुग्रह नारायन उर्फ खोखा सिंह का, जो सुब्रत राय के साथ बिताए गए पलों को याद कर भावुक हो गए। खोखा सिंह ने बताया कि सुब्रत रॉय, पालिटेक्निक के छात्र थे जबकि वह विश्वविद्यालय में पढ़ते थे। रॉय लंबरेटा स्कूटर से चलते थे जबकि मेरे पास बुलेट थी। एक दोस्त के माध्यम से उनसे संपर्क हुआ तो एक साथ उठना-बैठना शुरू हो गया।

एक दिन रॉय साहब ने कहा कि वह फाइनेंस कंपनी खोलना चाह रहे हैं। सभी औपचारिकताओं के बाद उन्होंने गोलघर में एक होटल में एक कमरा किराए पर लिया। वहीं, सहारा का पहला आफिस खुला। बाद में जब सहारा काफी ग्रोथ कर गया तो उसका आफिस लखनऊ में खोला गया। वहां से सहारा की पहचान पूरी दुनिया में हो गई।

1700 किमी फिएट कार चलाकर गोरखपुर आए थे राय...मना था जश्न

सुब्रत राय के जीवन की पहली कार फिएट थी। यह कार उन्होंने मुंबई से खरीदी और खुद चलाते हुए गोरखपुर लाए थे। उसी रात होटल विवेक में अपने दोस्तों को रात्रिभोज दिया था। इस दावत में तत्कालीन समय में उनके सारे दोस्त शामिल हुए थे। उस समय की ये पार्टी भी उनके जानने वालों के लिए यादगार बन गई थी। ये बातें होटल विवेक के मालिक आचिंत्य लाहिणी ने साझा की।

निवेशकों की धड़कनें बढ़ीं सताने लगा रुपये डूबने का डर

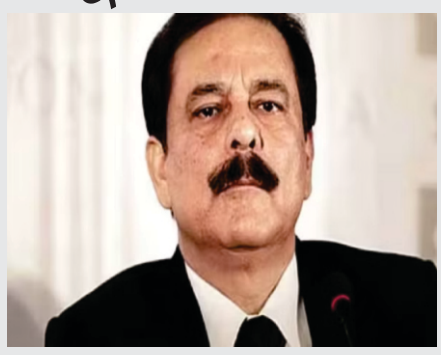

गोरखपुर। सेबी के दखल के बाद कल तक रुपये मिलने की उम्मीद पाले निवेशकों की धड़कनें बढ़ गईं हैं। बुधवार को कई लोगों ने सहारा के आफिस में संपर्क भी किया, सभी को भरोसा दिया गया है कि उनका पैसा जरूर मिलेगा। इसे लेकर आनलाइन आवेदन की प्रक्रिया भी लोग कर चुके हैं। सहारा समूह के संस्थापक सुब्रत राय के निधन के बाद अब निवेशकों को अपनी जमापूंजी डूबने का डर सताने लगा है। सेबी के दखल के बाद कल तक रुपये मिलने की उम्मीद पाले निवेशकों की धड़कनें बढ़ गईं हैं। कई लोगों ने सहारा के आफिस में संपर्क भी किया, सभी को भरोसा दिया गया है कि उनका पैसा जरूर मिलेगा। इसे लेकर अ नलाइन आवेदन की प्रक्रिया भी लोग कर चुके हैं।

कंपनी क्या निर्णय लेगी, इसका तो डर है ही

मेरे ३८ लाख रुपये फंसे हुए हैं। कंपनी की ओर से रुपये की वापसी की प्रक्रिया भी कराई जा चुकी है। लेकिन, इसी बीच सुब्रत राय के निधन से एक बार फिर रुपये डूबने का डर सताने लगा है। अब कंपनी में नया डायरेक्टर कौन होगा, उसका क्या फैसला होगा, जैसे तमाम सवाल मन में उठने लगे हैं।-प्रवीण गुप्ता, गुलरिहा।

जमा धनराशि अब भगवान भरोसे

सहारा इंडिया के प्रमुख सुब्रत राय सहारा के निधन की सूचना के बाद अब यही लग रहा है कि निवेश की रकम अब भगवान भरोसे ही है। अब यह आने वाले समय में ही तय हो पाएगा कि रकम मिलेगी या नहीं। अब इस कंपनी का मालिक कौन होगा और जनता की गाढ़ी कमाई के भुगतान के लिए सरकार क्या फैसला लेती है।-अनंत कुमार पटवा, धुरियापार।

अब तो उम्मीद भी टूट रही

चार लाख रुपये कई साल से फंसे हैं। जब आनलाइन आवेदन मांगा गया तो लगा कि अब रुपये मिल जाएंगे। सुब्रत राय के निधन के बाद अब चिंता बढ़ गई है। अब पता नहीं क्या होगा, बहुत डर लग रहा है। अब तो यही लग रहा है कि रुपये मिल गए तो किस्मत, नहीं तो जमापूंजी चली ही गई समझिए।-रीता तिवारी, लुहसी।

एक उम्मीद जगी थी, जो अब टूटती लग रही

छोटी-छोटी रकम जमा करके उसे बड़ा करने का सपना लेकर सहारा इंडिया में रुपये जमा किए थे। लंबे समय से रुपये फंसे थे, लेकिन इसी बीच आनलाइन फार्म भरा गया तो एक उम्मीद जग गई थी कि रुपये मिल जाएंगे, सुब्रत राय के निधन की खबर से डर सताने लगा है कि पता नहीं रुपये मिलेंगे या नहीं। अब तो उम्मीद ही टूटने लगी है। - मीरा देवी, डोहरिया बाजार।

रेती रोड पर 40 मिनट तक थमे रहे विसर्जन में शामिल गाड़ियों के पहिए

गोरखपुर। स्कूटी सवार महिला के चोटिल होने के बाद पनपे विवाद के बीच किसी ने अफवाह उड़ा दी कि महिला सिपाही से विवाद हुआ है और पुलिस उत्पीड़न कर रही है। यह अफवाह आग की तरह फैल गई और आगे-पीछे निकली प्रतिमाओं के के जुलूस में शामिल लोग भी जुटने लगे। गोरखपुर में रेती चौक के पास लक्ष्मी प्रतिमा घूमने के दौरान हुए विवाद को भले ही पुलिस ने शांत करा दिया लेकिन ४० मिनट तक विसर्जन का जुलूस थमा रहा और गाड़ियों की लंबी कतार लग गई। भीड़ को समझाने के लिए पुलिस को सख्ती के साथ ही मान मनौव्वल भी करना पड़ा। हालांकि, पुलिस की सूझबूझ का ही नतीजा रहा कि बड़ा विवाद टल गया और शांतिपूर्ण तरीके से प्रतिमा का विसर्जन कर दिया गया।

जानकारी के मुताबिक, स्कूटी सवार महिला के चोटिल होने के बाद पनपे विवाद के बीच किसी ने अफवाह उड़ा दी कि महिला सिपाही से विवाद हुआ है और पुलिस उत्पीड़न कर रही है। यह अफवाह आग की तरह फैल गई और आगे-पीछे निकली प्रतिमाओं के के जुलूस में शामिल लोग भी जुटने लगे। विवाद बढ़ता देखकर पुलिस ने सख्ती की तो एसपी सिटी कृष्ण कुमार बिश्नोई खुद मौके पर पहुंचे और लोगों को समझाना शुरू किया। बताया जा रहा है कि हिरासत में लिए गए नशे में धुत युवकों को पुलिस भीड़ के सामने भी ले गई और दिखाया कि यही उत्पाती हैं विसर्जन में शामिल लोग नहीं। पुलिस ने संभ्रांत लोगों को आगे किया तो मामला शांत हो गया लेकिन ४० मिनट तक अफरा-तफरी का माहौल रहा।

गुस्साए लोग करने लगे पुलिस के खिलाफ नारेबाजी

विवाद के बीच ही अचानक जब गाड़ियां आगे नहीं बढ़ रही थी तो पीछे मौजूद प्रतिमा के साथ लोग नारेबाजी करने लगे। ये लोग पुलिस की व्यवस्था से नाराज थे और कार्रवाई की मांग कर रहे थे। बाद में पुलिस ने उन्हें समझाया और सभी प्रतिमाओं को आगे बढ़ाया।

छठ पर ट्रेन टिकट–न नियमित ट्रेनों में बची जगह, न स्पेशल में सीटें खाली

लखनऊ। गोरखपुर से लखनऊ आने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस की चेयरकार में 21 से 23 नवम्बर तक 206, 314, 348 सीटें खाली हैं। गोरखधाम की स्लीपर में 278, 254, 177, थर्ड एसी में 129, 97, 103 वेटिंग है। छठ पर्व मनाने के बाद गोरखपुर से लखनऊ आने वाले यात्रियों के लिए न नियमित ट्रेनों में जगह है, न स्पेशल में सीटें खाली हैं। एक–एक कन्फर्म सीट की मारामारी है। हालांकि, वंदे भारत एक्सप्रेस की चेयरकार में सीटें खाली हैं, जिनसे राहत की उम्मीद है।

लखनऊ से बड़ी संख्या में लोग पूर्वांचल के जिलों व बिहार छठ पर्व मनाने के लिए गए हैं, जिनकी वापसी 21 नवम्बर से शुरू हो जाएगी। खास बात यह है कि बिहार के गया, पटना, सासाराम व यूपी के गोरखपुर आदि जिलों से लखनऊ आने वाली नियमित ट्रेनें फुल हैं। स्पेशल ट्रेनों में सीटें खाली नहीं हैं, जिससे कन्फर्म टिकटों की मारामारी और भी बढ़ गई है। इससे यात्रियों के माथे पर पेशानी है। 21 नवम्बर को सासाराम से लखनऊ आने वाली दुर्गियाना एक्सप्रेस की स्लीपर में 150 व थर्ड एसी में 47 वेटिंग है। जलियावाला बाग एक्सप्रेस की स्लीपर में 64 व एसी में 29 वेटिंग

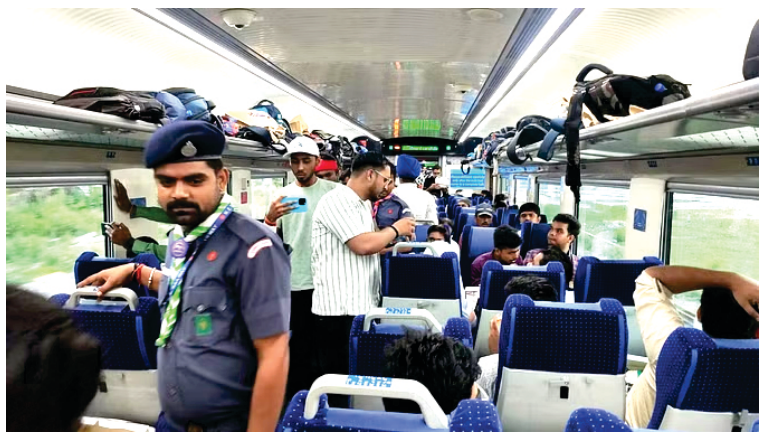

चल रही है।

इन ट्रेनों में ये है वेटिंग का हाल

गया से लखनऊ आने वाली दून एक्सप्रेस की स्लीपर में 21 से 23 नवम्बर तक क्रमशः 75, 69, 40 व थर्ड एसी में 17, 23, 17 वेटिंग, गंगा सतलुज एक्सप्रेस की स्लीपर में 185, 183, 163, थर्ड एसी में 72, 57, 61 तथा कोलकाता एक्सप्रेस की स्लीपर में 134, 119, 90 व थर्ड एसी में 30, रिग्रेट, 36 वेटिंग चल रही है। पटना से लखनऊ आने वाली श्रमजीवी एक्सप्रेस की स्लीपर में उपरोक्त तारीखों पर 106, 75, 51, थर्ड एसी में रिग्रेट, 48, 45 वेटिंग है। अर्चना एक्सप्रेस में 21 को 116 वेटिंग स्लीपर में है। पाटलिपुत्र लखनऊ जंक्शन एक्सप्रेस की चेयरकार में उपरोक्त तीन दिनों में क्रमशः 26, 17, आठ वेटिंग चल रही है। ऐसे ही उपासना, पंजाब मेल, पटना कोटा, मालदाटाउन आदि ट्रेनों में लम्बी वेटिंग से यात्री परेशान हैं।

वंदेभारत देगी राहत, चेयरकार में 348 सीटें खाली

गोरखपुर से लखनऊ आने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस की चेयरकार में 21 से 23 नवम्बर तक 206, 314, 348 सीटें खाली हैं। गोरखधाम की स्लीपर में 278, 254, 177, थर्ड एसी में 129, 97, 103 वेटिंग है। सप्तक्रांति एक्सप्रेस, बिहार सम्पर्कक्रांति में भी वेटिंग है। इतना ही नहीं बरौनी नई दिल्ली स्पेशल की स्लीपर में 62, 54, 42 व डिब्रूगढ़ नई दिल्ली स्पेशल की स्लीपर में 54, 46, 39 वेटिंग, मुम्बई फेस्टिवल स्पेशल की स्लीपर में 21 को 82 वेटिंग है।

चलेंगी तीन स्पेशल ट्रेनें

छठ पर रेलवे ने तीन जोड़ी स्पेशल ट्रेनें चलाने का निर्णय बृहस्पतिवार को लिया गया है। इनमें 05073 गोरखपुर आनन्दविहार 21 व 24 नवंबर को आन्दविहार से, 05075 छपरा आनन्दविहार 20 व 23 नवंबर को छपरा से, 05041 छपरा कचहरी अमृतसर 21 व 25 नवंबर को छपरा कचहरी से चलेगी। इन ट्रेनों में सीटों की बुकिंग खोल दी गई है।

तीन ट्रेनों में लगेंगे अतिरिक्त कोच

छठ पर यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ के मद्देनजर उत्तर रेलवे ने तीन ट्रेनों में अतिरिक्त कोच लगाने का फैसला लिया है। इसके तहत 12429 लखनऊ नई दिल्ली एसी एक्सप्रेस, 14207/8 पद्मावत एक्सप्रेस और 14205/06 अयोध्या कैंट–दिल्ली एक्सप्रेस में अतिरिक्त कोच लगाए गए हैं।

सीसीटीवी से रखी जाएगी पैनी नजर

छठ पर्व पर रेलवे स्टेशनों और ट्रेनों में जुटने वाली भीड़ के साथ–साथ यात्री सुविधाओं पर सीसीटीवी से पैनी नजर रखने के निर्देश उत्तर रेलवे के डीआरएम डॉ. मनीष थपल्याल ने दिए हैं। उन्होंने रेलकर्मियों को एलर्ट रहने को भी कहा है। इसी क्रम में उद्घोषणा कक्ष और डिस्प्ले बोर्ड के जरिए ट्रेनों की जानकारी देना, विस्फोटक और ज्वलनशील पदार्थों को लेकर यात्रा न करने की चेतावनी देना आदि की जानकारी दी जाएगी। संदिग्ध व्यक्ति होने की आशंका पर तत्काल आरपीएफ कार्रवाई करेगी।

गोरखपुर की हवा में जहर हुआ आधा, टहलने लायक अब भी नहीं

गोरखपुर। तीन दिन से बिगड़ी गोरखपुर शहर की हवा थोड़ी राहत देने वाली रही। दरअसल, पैड़लेगंज–नौसड़ सिक्सलेन पर बुधवार की देर रात ही ओवरब्रिज के लिए बनाए जा रहे पिलर के दौरान उखड़ी सड़क की मरम्मत की गई। तारकोल की सड़क एक लेयर में बिछाने से अब धूल नहीं उड़ रही है। गोरखपुर के दिवाली में पटाखों के बारूद से प्रदूषित हुई शहर की हवा अब धीरे–धीरे सुधरने लगी है। निर्माण वाले कार्य स्थलों पर पानी के लगातार छिड़काव से धूल का गुबार थम गया है। लिहाजा शहर की हवा में भी सुधार हुआ है। बृहस्पतिवार को शहर के एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) का स्तर 121 दर्ज किया गया, जबकि एक दिन पहले ही बुधवार को एक्यूआई 180 पर था।

दिवाली में पटाखों के बारूद से शहर की हवा काफी प्रदूषित हो गई थी। दिवाली के दूसरे दिन सोमवार को शहर का एक्यूआई 300 दर्ज किया गया। बुधवार को भी शहर में प्रदूषण का स्तर खराब रहा। इसकी अपेक्षा बृहस्पतिवार की सुबह करीब 10 बजे एक्यूआई 131 व शाम सात बजे एक्यूआई 121 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर दर्ज किया गया।

तीन दिन से बिगड़ी शहर की हवा बृहस्पतिवार को थोड़ी राहत देने वाली रही। दरअसल, पैड़लेगंज–नौसड़ सिक्सलेन पर बुधवार की देर रात ही ओवरब्रिज के लिए बनाए जा रहे पिलर के दौरान उखड़ी सड़क की मरम्मत की गई। तारकोल की सड़क एक लेयर में बिछाने से अब धूल नहीं उड़ रही है। बृहस्पतिवार को दोपहिया वाहन चालकों को भी बहुत दिक्कतें नहीं हुईं। दृश्यता भी बढ़ गई है। इससे आसपास के घरों के लोगों को बहुत सुकून मिला है। हार्डवेयर के दुकानदार सुशील गुप्ता ने बताया कि धूल से हम लोग बहुत परेशान थे। मास्क लगाना पड़ रहा था। लेकिन, सड़क की मरम्मत होने और पानी के छिड़काव से बहुत राहत मिली है।

मनबढ़ों ने पराली में आग लगाई, ट्रॉली–ट्रैक्टर जली

सहजनवां क्षेत्र के पट्टी धर्मदास गांव में पराली में मनबढ़ों ने आग लगा दी। आग से पास में खड़ी ट्रॉली–ट्रैक्टर भी जलकर राख हो गई। बृहस्पतिवार को प्रधान ने पुलिस को अज्ञात के खिलाफ तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। पट्टी धर्मदास के प्रधान महेंद्र यादव ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि सुप्रीम कोर्ट के दिशा–निर्देश के तहत प्रधानमंत्री वेस्ट मैनेजमेंट पराली प्रबंधन के तहत अपनी संस्था ब्रह्म कृषि बॉयो एनर्जी फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड भेलऊर की ओर से 40 टन पराली जमा कराई थी। बुधवार रात मनबढ़ों ने पराली में आग लगा दी। इससे पराली व ट्रैक्टर–ट्रॉली जलकर नष्ट हो गई। सहजनवां के थानेदार इत्यानंद पांडेय ने बताया कि तहरीर मिली है, जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

धुंध की आगोश में सुबह, दिन में साफ रहा आसमान

मौसम में बदलाव का दौर जारी है। बृहस्पतिवार की सुबह धुंध के आगोश में रही। इससे सुबह टहलने वालों को दिक्कतें हुईं। हालांकि, सुबह 9 बजे तक आसमान साफ होने से सूरज की चटक किरणों का अहसास होने लगा। परिणामस्वरूप दिन में पिछले चार दिनों की अपेक्षा अधिकतम तापमान में मामूली बढ़ोतरी दर्ज की गई, जबकि न्यूनतम तापमान 15.1 डिग्री सेल्सियस रहा।

पिछले एक सप्ताह से न्यूनतम और अधिकतम तापमान में दोगुना का अंतर देखने को मिल रहा है।

इसके चलते जहां दिन में मौसम शुष्क रह रहा है, वहीं रात में ठंड का अहसास होने लग जा रहा है। दिन में मौसम शुष्क देख कर लापरवाही बरतने वाले बीमार भी पड़ रहे हैं। सूरज की किरणों के कमजोर पड़ते ही ठंड का अहसास होने लग रहा है। अधिकतम तापमान 30.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जबकि न्यूनतम तापमान 15.1 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसम विज्ञान विभाग ने शुक्रवार को अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 15 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान जताया है।

पांच दिन में कोर्ट में पेश न हुआ आशू

तो दर्ज होगा एक और केस, पत्नी ने कमिश्नर से की है शिकायत

कानपुर। पुलिस के प्रार्थनापत्र पर सुनवाई करते हुए सीएमएम सूरज मिश्रा की कोर्ट ने 16 अक्तूबर को जितेंद्र यादव और 21 अक्तूबर को डॉ. प्रियरंजन आशू दिवाकर के खिलाफ कुर्की का आदेश दिया था। नपुर में किसान बाबू सिंह की आत्महत्या मामले में फरार डॉ. प्रियरंजन आशू दिवाकर पांच दिन में हाजिर न हुआ तो उसके खिलाफ एक और केस दर्ज होगा। 21 अक्तूबर को सीएमएम सूरज मिश्रा की कोर्ट ने उसके खिलाफ कुर्की का आदेश दिया था। इस दौरान कोर्ट में हाजिर होने के लिए उसे एक माह का समय दिया गया था।

अगर इस मियाद में वह पेश नहीं होता है, तो उसके खिलाफ नियमानुसार कोर्ट के आदेश की नाफरमानी पर एक और केस दर्ज हो जाएगा। इसके बाद उसके खिलाफ कुर्की की कार्रवाई शुरू हो जाएगी। बता दें, चकेरी निवासी किसान बाबू सिंह यादव ने नौ सितंबर ट्रेन से कटकर आत्महत्या कर ली थी। उसकी जेब से एक सुसाइड नोट मिला था।

इसमें उसने तत्कालीन भाजपा नेता डॉ. प्रियरंजन आशु दिवाकर पर धोखाधड़ी कर छह करोड़ रुपये की जमीन हथियाने का आरोप लगाया था। बाबू सिंह की पत्नी बिटान देवी ने प्रियरंजन, जितेंद्र, बबलू, राहुल जैन, मधुर पांडेय और शिवम चौहान के खिलाफ केस दर्ज कराया था। राहुल जैन और मधुर पांडेय जेल में हैं।

सीबीआई ने सेनेटरी इंस्पेक्टर को रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़ा

मेरठ। सीबीआई टीम ने छापा मारा तो हड़कंप मच गया। सीबीआई की 15 सदस्यीय टीम ने सेनेटरी इंस्पेक्टर योगेश यादव को रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार कर लिया।मेरठ में छावनी परिषद कार्यालय में गाजियाबाद की सीबीआई टीम ने छापा मारा तो हड़कंप मच गया। सीबीआई की 15 सदस्यीय टीम ने सेनेटरी इंस्पेक्टर योगेश यादव को रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार कर लिया। सेनेटरी इंस्पेक्टर अभिषेक की फोन रिकॉर्डिंग के आधार पर उसके खिलाफ भी जांच शुरू कर दी गई है। अभिषेक की तलाश में इस बीच सीईओ ज्योति कुमार ने भी सीबीआई के कहने पर उससे संपर्क करने का प्रयास किया, लेकिन उसने फोन नहीं रिसीव किया। सीबीआई टीम ने ऑफिस सहित दोनों के घर से भी दस्तावेज जुटाए हैं। देर रात तक टीम की विभागीय कार्रवाई जारी रही। कैंट बोर्ड कार्यालय में गुरुवार दोपहर दो बजे सीबीआई की 15 सदस्य टीम सीधा सफाई अनुभाग में पहुंची।

टीम द्वारा जिस कक्ष में जांच की गई उस कक्ष में सफाई अधीक्षक वीके त्यागी, सेनेटरी इंस्पेक्टर योगेश यादव और सेनेटरी इंस्पेक्टर अभिषेक बैठते हैं। टीम ने सेनेटरी इंस्पेक्टर योगेश यादव को लालकुर्ती निवासी वरुण अग्रवाल से रिश्वत लेते हुए मौके पर पकड़ लिया। विभागीय सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार, छापामारी में 25 हजार, 15 हजार रुपये की दो गड्डी बरामद होने की बात सामने आई है।

इस बीच दूसरा सेनेटरी इंस्पेक्टर अभिषेक ऑफिस में नहीं होने के कारण सीबीआई के हाथ नहीं लग सका। पीड़ित से अभिषेक की रिश्वत के 10 हजार रुपये लेनदेन की रिकॉर्डिंग टीम को मिल गई है।

जिसके बाद सीबीआई ने उसके घर पर घंटों तक दस्तावेजों की जांच की। देर रात तक सेनेटरी इंस्पेक्टर अभिषेक और सेनेटरी इंस्पेक्टर योगेश यादव के घर और छावनी परिषद कार्यालय में सीबीआई टीम जांच करती रही।

दो महीने से लगी हुई थी सीबीआई टीम

लालकुर्ती के गोविंद प्लाजा में 200 से अधिक दुकानें हैं। शिकायतकर्ता वरुण अग्रवाल का आरोप है कि सेनेटरी इंस्पेक्ट योगेश यादव और सेनेटरी इंस्पेक्टर अभिषेक यहां दुकान में कुछ भी नवीनीकरण के कार्य के लिए 25 हजार से 50 हजार रुपये रिश्वत लेते हैं। वरुण अग्रवाल ने बताया कि उसने दुकान में शटर लगाया तो कैंट बोर्ड की टीम ने उसे तोड़ दिया। इस बीच दो दुकानों में 50 हजार रुपये देकर शटर लता लिए गए। उसने इस संबंध में सीबीआई ऑफिस में लिखित में शिकायत की।

टीम इस मामले में दो महीने तक लगातार वरुण अग्रवाल के संपर्क में रही। लगातार सारी गतिविधियों पर नजर रखती रही। कई बार माइक और कैमरा लगाकर पीड़ित को दोनों इंस्पेक्टरों के पास भेजा गया और पूरी बातचीत की रिकार्डिंग करा ली गई।

इस बीच योगेश यादव ने फोन पर वरुण अग्रवाल को आश्वस्त किया कि पैसा लेकर शटर लग जाएगा। जिसके बाद सीबीआई सक्रिय हो गई। टीम द्वारा शुक्रवार को रिश्वत लेते हुए योगेश यादव को रंगे हाथ दबोच लिया गया।

योगेश यादव को पहले भी हो चुकी है जेल

सेनेटरी इंस्पेक्टर योगेश यादव सितंबर 2016 में मोटर पंप ऑपरेटर की नियुक्ति के मामले में 10 लाख की रिश्वत मांगने पर फंसे थे। सीबीआई द्वारा की गई कार्रवाई में योगेश यादव को जेल जाना पड़ा था।

2019 में जमानत पर बाहर आने पर सीईओ प्रसाद च्वहाण कार्यकाल में योगेश की ज्वॉइनिंग हुई थी। इसके बाद सीईओ नवेंद्र नाथ द्वारा उसको नौकरी से बर्खास्त किया गया था। इसके बाद सीईओ हरेंद्र सिंह के कार्यकाल में योगेश की फिर से ज्वाइनिंग हुई थी। हाल ही में सीईओ ज्योति कुमार द्वारा योगेश यादव पर भ्रष्टाचार के मामले में कार्रवाई की गई थी।

पश्चिम एशिया में हुई घटनाओं से उभर रहीं नई चुनौतियां हमारा एकजुट रहना जरूरी, पीएम मोदी की अपील

नई दिल्ली। पीएम मोदी ने कहा कि वायस आफ ग्लोबल साउथ २१वीं सदी की बदलती हुई दुनिया का सबसे अनूठा मंच है। भौगोलिक रूप से ग्लोबल साउथ हमेशा से रहा है, लेकिन उसे इस प्रकार से आवाज पहली बार मिल रही है। भारत की मेजबानी में ग्लोबल साउथ समिट का आयोजन शुरू हो गया है। जी-२० की मेजबानी के बाद भारत की कूटनीति में यह सम्मेलन काफी अहम माना जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को वीडियो क न्फ्रेंसिंग के जरिए दूसरी वायस आफ ग्लोबल साउथ समिट का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि पिछले साल दिसंबर में जब भारत ने जी-२० की अध्यक्षता संभाली थी, तब ही फैसला कर लिया था कि ग्लोबल साउथ के देशों की आवाज को आगे बढ़ाना हमारी प्राथमिकता रहेगी।

दुनिया का सबसे अनूठा मंच

पीएम मोदी ने कहा कि वायस आफ ग्लोबल साउथ २१वीं सदी की बदलती हुई दुनिया का सबसे अनूठा मंच है। भौगोलिक रूप से ग्लोबल साउथ हमेशा से रहा है, लेकिन उसे इस प्रकार से आवाज पहली बार मिल रही है।

ये हमारे साझा प्रयासों से हो पाया है। हम १०० से ज्यादा अलग-अलग देश हैं, लेकिन हमारे हित समान हैं, हमारी प्राथमिकताएं समान हैं।

जी-20 की अध्यक्षता संभाली

उन्होंने आगे कहा, पिछले साल दिसंबर में जब भारत ने जी-२० की अध्यक्षता संभाली तब हमने इसमें ग्लोबल साउथ के देशों की आवाज को आगे बढ़ाना अपनी प्राथमिकता मानीं। इसके साथ ही भारत मानता है कि नई टेक्नोल जी न र्थ और साउथ के बीच दूरियां बढ़ाने का नया स्त्रोत नहीं बनना चाहिए।

बातचीत और कूटनीति पर जोर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, श्हम सभी देख रहे हैं कि पश्चिम एशिया क्षेत्र की घटनाओं से नई चुनौतियां उभर रही हैं। भारत ने सात अक्तूबर को इस्राइल में हुए आतंकी हमले की निंदा की है। हमने संयम भी बरता है। हमने बातचीत और कूटनीति पर जोर दिया है। हम इस्राइल और हमास के बीच संघर्ष में नागरिकों की मौत की भी कड़ी निंदा करते हैं। फलस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास से बात करने के बाद हमने फलस्तीन के लोगों को मानवीय सहायता भी भेजी है। यह वह समय है जब ग्लोबल साउथ के देशों को व्यापक वैश्विक भलाई के लिए एकजुट होना चाहिए।

दिल्ली में 500 के पार प्रदूषण स्तर

बिहार-बंगाल में सांस लेना दुश्वार, देश के टाप 10 प्रदूषित शहर का AQI

शुक्रवार सुबह सात बजे दिल्ली का AQI 437 हुआ दर्ज देश क कई शहरों में इस समय एक्यूआई 400 के पार

उत्तर भारत में बढ़ता प्रदूषण चर्चा का विषय बना हुआ है। कई शहरों में सांस लेना लोगों के लिए मुश्किल हो चुका है। यहां पर शहरों की हवा इतनी जहरीली हो गई है कि लोगों को सांस से जुड़ी समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। आमतौर पर 50 एक्यूआई से कम हवा को गुड क्वालिटी का माना जाता है लेकिन कई शहरों में AQI 500 के पार हो चुका है।

नई दिल्ली। दिवाली के अगले दिन से ही दिल्ली-एनसीआर समेत देश के कई हिस्सों में प्रदूषण का स्तर काफी बढ़ गया है। कई शहरों का एक्यूआई 300 के नीचे ही नहीं आ रहा है, जिसके कारण लोगों को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इतना ही नहीं, अब देश के सबसे प्रदूषित शहरों में और भी कई राज्य जुड़ गए हैं।

400 के पार दिल्ली का AQI

जानकारी के मुताबिक, दिल्ली-एनसीआर में शुक्रवार को वायु गुणवत्ता और खराब हो गई। अब यह अति गंभीर श्रेणी के करीब पहुंच गई है। शहर में शुक्रवार सुबह सात बजे AQI 437 दर्ज किया गया है, जबकि गुरुवार शाम 4 बजे हवा की गुणवत्ता का सूचकांक 419 दर्ज किया गया था। इसके अलावा, गाजियाबाद (374), गुरुग्राम (404), ग्रेटर नोएडा (313), नोएडा (366), और फरीदाबाद (415) में भी वायु गुणवत्ता बहुत खराब से गंभीर दर्ज की गई।

पराली जलाने से बिगड़े हालात

साथ ही, हरियाणा के कई शहर बेहद गंभीर की श्रेणी में आ गए हैं, जिसमें नारनौल का एक्यूआई स्तर 435 पहुंच गया है। दूसरे स्थान पर फरीदाबाद में एक्यूआई 424 और रोहतक में एक्यूआई स्तर 409 है। वहीं, पंजाब में पराली जलाने के कारण प्रदूषण का स्तर काफी ज्यादा बढ़ गया है। गुरुवार को कुछ ज्यादा ही खराब एक्यूआई के हालात दिखे। यहां अधिकतम एक्यूआई 317, न्यूनतम 253 और एवरेज 287 पाया गया।

जानें प्रमुख शहरों का हाल

शहर	AQI
दिल्ली	500
मुम्बई	154
पटना	320
अहमदाबाद	177
हैदराबाद	163
लखनऊ	198
जयपुर	174
इंदौर	357

देश के कई शहरों में इस समय एक्यूआई 400 के पार है। इन शहरों में बच्चों, बुजुर्गों और बीमार लोगों के लिए सांस लेना एकदम मुश्किल होता जा रहा है। हर वक्त सांस लेने में तकलीफ और कई तरह की परेशानियां हो रही है।

देश के सबसे प्रदूषित शहर

शहर	अनुमानित AQI
दिल्ली	606
पटना	574
हावड़ा	498
विशाखापट्टनम	463
बेगुसराय	423
नई दिल्ली, यूएस एंबेसी	411
इंदौर	371
छपरा	341
आरा	324
कटिहार	314

देश के सबसे कम प्रदूषित शहरों में शामिल नाम

जहां देश के कई हिस्सों में लोगों के लिए सांस लेना मुश्किल हो रहा है, वहीं कुछ ऐसे शहर हैं, जहां ।फ॰ 50 के नीचे दर्ज किया गया है। इस लिस्ट में दक्षिण भारत के सबसे अधिक शहर शामिल हैं। इसमें तमिलनाडु का कोयंबटूर का प्रदूषण स्तर 11 दर्ज किया गया। साथ ही, झारखंड के जोरापोखर (11), गुजरात के नांदेसारी (20), तमिलनाडु के थूथूकुड़ी (22), कर्नाटक के कालाबुर्गी (25), मिजोरम का आइजोल (34), केरल के तिरुवनंतपुरम (35), सिक्किम का गंगटोक (37) और तमिलनाडु के रामानंतपुरम में एक्यूआई 38 दर्ज किया गया है।

योगी कैबिनेट में होने जा रहा है बड़ा बदलाव

चुनाव के बाद नए नामों को मिल सकती है जगह

योगी मंत्रिमंडल का विस्तार किया जाएगा। भाजपा संगठन नतीजों को देखते हुए ही योगी मंत्रिमंडल में शामिल होने वाले चेहरों को हरी झंडी देगी। विपक्ष के जातिवार गणना के मुद्दे ने अगर राज्यों के विधानसभा चुनाव में असर दिखाया तो यहां लोकसभा चुनाव को देखते हुए मंत्रिमंडल विस्तार में खासतौर से पिछड़ा वर्ग को साधने की और कोशिश दिखेगी।

राज्य ब्यूरो, लखनऊ। तीन दिसंबर को पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद योगी मंत्रिमंडल का विस्तार किया जाएगा। अगले वर्ष लोकसभा चुनाव के मद्देनजर जातीय समीकरण साधने के लिए मंत्रिमंडल में कुछ ही नए चेहरे शामिल किए जाएंगे लेकिन मौजूदा मंत्रियों के विभागों में व्यापक बदलाव किया जा सकता है। क्षेत्रीय संतुलन को बनाए रखने के लिए भाजपा संगठन में भी फेरबदल की संभावना है।

28 नवंबर को शुरू होगा शीतकालीन सत्र

वैसे तो सुभासपा के ओम प्रकाश राजभर और पूर्व मंत्री दारा सिंह चौहान को मंत्री बनाए जाने को लेकर महीनों से चर्चा चल रही है लेकिन अब तक मंत्रिमंडल विस्तार नहीं हुआ है। अब बताया जा रहा है कि २८ नवंबर से विधानमंडल का शीतकालीन सत्र होने और तीन दिसंबर को राज्यों के चुनावी नतीजों के आने के बाद ही अब मंत्रिमंडल विस्तार होगा। भाजपा संगठन नतीजों को देखते हुए ही योगी मंत्रिमंडल में शामिल होने वाले चेहरों को हरी झंडी देगी। विपक्ष के जातिवार गणना के मुद्दे ने अगर राज्यों के विधानसभा चुनाव में असर दिखाया तो यहां लोकसभा चुनाव को देखते हुए मंत्रिमंडल विस्तार में खासतौर से पिछड़ा वर्ग को साधने की और कोशिश दिखेगी।

कुछ नेताओं को मंत्रिमंडल में शामिल किया जा सकता है

ऐसे में सपा छोड़ भाजपा का दामन थामने वाले दारा सिंह चौहान और एनडीए में शामिल हो चुके सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) के अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर का मंत्री बनना तय माना जा रहा है। इनके साथ ही राज्यों के चुनाव में अहम भूमिका निभाने वाले पार्टी के कुछ नेताओं को भी मंत्रिमंडल में शामिल किया जा सकता है। सूत्रों के अनुसार मंत्रिमंडल विस्तार में मंत्री भले ही दो-चार बनें लेकिन उसके बाद मुख्यमंत्री द्वारा मौजूदा मंत्रियों का प्रदर्शन देखते हुए उनके विभागों में बड़ा उलटफेर किया जा सकता है। सरकार और संगठन दोनों में ही दायित्व संभालने वालों को एक पद से हटाया जाएगा। ऐसे में संगठन में भी कुछ बदलाव होना तय है।

रेव पार्टी में सांपों का जहर

आरोपी राहुल की रिमांड खत्म, पुलिस ने की पूछताछ

दिल्ली-एनसीआर। पांचों आरोपियों में से राहुल की रिमांड पुलिस को मिली। गुरुवार दोपहर १२ बजे से शुक्रवार १२ बजे तक आरोपी राहुल पुलिस की रिमांड पर रहा। सांपों का जहर सप्लाई करने के मामले में मुख्य आरोपी राहुल की आज १२ बजे रिमांड पूरी हो गई है। देर रात तक पुलिस अफसरों ने पूछताछ की। पुलिस राहुल और एल्विश के कनेक्शन को खंगालने में जुटी है। गुरुवार को पांचों आरोपियों में से राहुल की रिमांड पुलिस को मिली। गुरुवार दोपहर १२ बजे से शुक्रवार १२ बजे तक आरोपी राहुल पुलिस की रिमांड पर रहा।

ऐसे हुआ सांप वाली पार्टी का खुलासा

सांसद मेनका गांधी द्वारा संचालित संस्था पीपुल्स फार एनिमल (पीएफए) में एनिमल वेलफेयर में अ फिसर के पद पर कार्यरत गौरव गुप्ता ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि उन्होंने एक ग्राहक बनकर यूट्यूबर एल्विश यादव को फोन कर रेव पार्टी आयोजित कराने की बात की और सांप का बंदोबस्त करने में मदद मांगी थी।

नौ सांप व 20 मिलीलीटर जहर बरामद

गौरव गुप्ता ने बताया कि उन्हें बातचीत के बाद बदरपुर निवासी एजेंट राहुल का नंबर मिला था।

जिससे बातचीत के बाद ११ सांप पार्टी में लाने का सौदा २१ हजार रुपये में तय हुआ। राहुल (३२) के अपने अन्य साथियों टीटूनाथ (४५), जयकरन (५०), नारायण (५०) और रविनाथ (४५) के साथ बताए गए स्थान सेक्टर-५१ के सेवर न बैंकट ह ल पहुंचते ही पीएफए, वन विभाग और पुलिस की टीम ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उनके पास सं कुल नौ सांप व २० मिलीलीटर जहर बरामद हुआ था। जिसकी कीमत लाखों रुपये बताई जा रही है।

एजेंट राहुल ने खोल दिया एल्विश का राज

पुलिस को दी शिकायत में पीएफए के अ फिसर गौरव गुप्ता ने पुलिस को बताया कि एल्विश यादव नोएडा-एनसीआर के फार्म हाउसों में अन्य यूट्यूबर सदस्यों के साथ मिलकर स्नेक वेनम व जिंदा सांपों के साथ पूर्व में भी वीडियो शूट कराते हैं। यही नहीं गैर कानूनी रूप से रेव पार्टियों को आयोजित कराते हैं। जिनमें विदेशी युवतियों को बुलाकर स्नेक वेनम व नशीले पदार्थों का सेवन कराया जाता है। ये सारी जानकारी एजेंट राहुल से बातचीत के दौरान मिली है।

मीडिएटर के जरिए पहुंचने का प्रयास

राहुल सिर्फ एल्विश और फाजिलपुरिया नहीं, बल्कि कई और लोगों के लिए भी एनसीआर में पार्टी में सांप और वेनम लेकर जाता था। उनके नाम तो नहीं लेकिन उनके मध्यस्थ के नाम इसमें शामिल है। केस में अब मीडिएटर के जरिए ही पुलिस उन लोगों तक पहुंचने का प्रयास कर रही है, जिनके लिए राहुल सांप और वेनम लेकर जाता था।

ट्रेडिशनल ड्रेस में मृणाल ठाकुर लगीं बला की खूबसूरत

किलर लुक से लूटी महफिल

मृणाल ठाकुर ने किलर लुक से ढहाया कहर
सामने आई एक्ट्रेस की ये लेटेस्ट फोटो
पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में रहीं मृणाल ठाकुर

एंटरटेनमेंट डेस्क, नई दिल्ली। मौजूदा समय में हिंदी सिनेमा की मशहूर एक्ट्रेस के बारे में जिक्र किया जाए तो उसमें मृणाल ठाकुर का नाम जरूर शामिल होगा। आए दिन अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ को लेकर मृणाल ठाकुर लाइमलाइट का हिस्सा बनी रहती हैं। इतना ही नहीं कमाल की फोटो और वीडियो की वजह से मृणाल सोशल मीडिया पर महफिल भी लूटती रहती हैं। इस बीच मृणाल ठाकुर की लेटेस्ट तस्वीरें सामने आई हैं, जिनमें दिवाली के बाद भी एक्ट्रेस अपने किलर लुक से धमाल मचा रही हैं।

मृणाल ठाकुर ने किलर लुक से ढहाया कहर

अक्सर देखा जाता है कि मृणाल ठाकुर की कोई न कोई फोटो और वीडियो फैंस के बीच चर्चा का विषय बनती रहती है। वहीं सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहने वालीं मृणाल भी अपने कातिलाना हुस्न के जरिए माहौल बनाने का कोई अवसर नहीं गंवाती हैं। हाल ही में मृणाल ठाकुर की लेटेस्ट तस्वीरें सामने आई हैं, जिन्हें बुधवार को शपिप्राश एक्ट्रेस ने अपने अ फिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर शेयर किया है। इन तस्वीरों में आप देख सकते हैं कि एक्ट्रेस ब्राउन कलर की स्टाइलिश ट्रेडिशनल ड्रेस में दिखाई दे रही हैं। मृणाल ठाकुर कमसिन अदाएं इन फोटो में चार चांद लगाने का काम कर रही हैं। इतना नहीं उनकी दिलकश मुस्कान इन फोटो की खूबसूरती को और ज्यादा बढ़ा रही है। कुल मिलाकर इन लेटेस्ट तस्वीरों में मृणाल ठाकुर का लुक बेहद ग र्जियस लग रहा है। फैंस उनकी इन तस्वीरों पर जमकर लाइक और कमेंट कर रहे हैं, जिसके चलते उनकी ये फोटो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रही हैं।

पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में रहीं मृणाल ठाकुर

हाल ही में अपनी प्रोफेशनल लाइफ से ज्यादा पर्सनल लाइफ को लेकर मृणाल ठाकुर चर्चा का विषय बनी हैं। एक तरफ किसी साउथ एक्टर से शादी की खबरों को लेकर मृणाल ने जमकर सुर्खियां बटोरीं, जिनका बाद में खुद एक्ट्रेस ने खंडन कर दिया। दूसरी तरफ मृणाल ठाकुर और सिंगर बादशाह का एक वीडियो सामने आया, जिसमें मृणाल रैपर का हाथ पकड़ती हुईं दिखाई दीं, जिसके बाद इन दोनों की डेटिंग के कयास लगने शुरू हो गए है। हालांकि ये ज्यादा देर तक नहीं चला और खुद बादशाह ने डेटिंग की अफवाहों को सिरे से खारिज कर दिया।

देर हो जाए उम्मीद करती हूं उससे पहले उसे समझ आए

काम्या पंजाबी ने अंकिता जैन को दी बड़ी सलाह
बिग बास 17 में अंकिता के बर्ताव पर काम्या पंजाबी का आया रिएक्शन
विक्की जैन के साथ रिश्ते पर काम्या ने अंकिता को कही ये बात

सलमान खान का विवादित शो बिग बास सीजन 17 शुरुआत से ही चर्चा में बना हुआ है। इस सीजन में कंटेस्टेंट दर्शकों को एंटरटेन करने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं। अब हाल ही में विक्की जैन को लेकर बिग बास की एक्स कंटेस्टेंट काम्या पंजाबी ने अंकिता लोखंडे को एक बड़ी नसीहत दे डाली है।

एंटरटेनमेंट डेस्क, नई दिल्ली। सलमान खान के शो बिग बास सीजन १७ में शुरुआत से ही घरवाले एक-दूसरे पर वार करने से बिल्कुल भी पीछे नहीं हट रहे हैं। तीन हिस्सों में डिवाइड मकानों ने घरवालों को भी बांट दिया है। कलर्स के इस विवादित शो को आनएयर हुए १ महीने से ज्यादा का समय बीत चुका है। एक तरफ जहां ईशा मालवीय- समर्थ जुरेल और अभिषेक की तिकड़ी लगातार सुर्खियां बटोर रही है, तो वहीं अंकिता लोखंडे और विक्की जैन के बीच भी शुरुआत से ही काफी तू-तू, मैं-मैं हो रही है। दोनों के रिश्ते पर अब सोशल मीडिया पर भी लोग अपनी प्रतिक्रिया जाहिर कर रहे हैं। हाल ही में काम्या पंजाबी ने भी अंकिता लोखंडे के बर्ताव को लेकर अपना रिएक्शन दिया है।

बिग बास की एक्स खिलाड़ी काम्या पंजाबी बीते सीजंस की तरह सलमान खान के इस सीजन को भी लगातार फालो कर रही हैं। कंटेस्टेंट्स के गेम पर भी वह अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करती रहती हैं। अब हाल ही में शक्ति-अस्तित्व एक एहसास की एक्ट्रेस ने अंकिता लोखंडे के विक्की जैन के साथ किए गए बर्ताव पर अपना रिएक्शन देते हुए ट्वीट किया है। उन्होंने लिखा, मैं अंकिता को पसंद करती हूं, लेकिन आज मुझे ऐसा लग रहा है कि उसे इस शो में नहीं आना चाहिए था, खासकर पति विक्की जैन के साथ। मैं उम्मीद करती हूं कि उसे जल्द ही ये गेम समझ आ जाए, इससे पहले उसके और विक्की दोनों के लिए बहुत देर हो जाए।आपको बता दें कि बिग बास ने हाल ही में विक्की जैन और अंकिता लोखंडे के मकान को अलग कर दिया। विक्की जैन बिग बास के घर में कंटेस्टेंट को लीड करते हुए दिखाई देते हैं, इसलिए बिग बास ने उन्हें दिमाग के मकान में भेज दिया, जिसके बाद अंकिता और उनके बीच काफी झगड़ा देखने को मिला।

लंबे ब्रेक के बाद जेनिफर विंगेट कर रहीं इंडस्ट्री में वापसी, पुराने को-स्टार के साथ आएंगी नजर

एंटरटेनमेंट डेस्क। जेनिफर विंगेट टीवी इंडस्ट्री की जानी-मानी अभिनेत्री हैं। जेनिफर विंगेट ने शिविन नारंग के साथ बेहद सीजन-२ किया, जिसके बाद किसी सीरियल में नजर नहीं आई थीं। अब लंबे ब्रेक के बाद जेनिफर इंडस्ट्री में वापसी के लिए तैयार हैं। इस बात की जानकारी अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर पोस्ट के जरिए साझा की है।

पोस्ट साझा कर कही यह बात

जेनिफर ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट से कुछ तस्वीरें साझा की हैं, जिसमें वे अपने आगामी प्रोजेक्ट को लेकर काफी एक्साइटेड दिखाई दे रही हैं। अभिनेत्री तस्वीरों में डायरेक्टर अनिरुद्ध राजडेरकर और अपने पुराने को-स्टार करण वाही के साथ नजर आएंगी।

वहीं, एक तस्वीर में जेनिफर डायरेक्टर और टीम के साथ स्क्रिप्ट पर बात करती दिख रही हैं। अभिनेत्री ने कैप्शन में लिखा, वास्तव में एक लंबे अंतराल के बाद राजडेरकर के साथ वापसी, मेरे वाहिंदर के साथ काम करना, उसी दिन १७ एम (१७ मिलियन फालोअर्स) हो जाना, निश्चित रूप से जश्न मनाने का दिन।

इंस्टाग्राम पर बढ़े फालोअर्स

जेनिफर विंगेट जहां अनिरुद्ध राजडेरकर और करण वाही के साथ इंडस्ट्री में वापसी कर रही हैं। वहीं, अभिनेत्री के सोशल मीडिया अकाउंट इंस्टाग्राम पर १७ मिलियन फालोअर्स हो गए हैं। जेनिफर विंगेट के लिए यह दोहरे जश्न की बात है।

इस सीरीज में आईं थीं नजर

जेनिफर विंगेट को आखिरी बार छोटे पर्दे पर बेहद सीजन- २ में शिविन नारंग के साथ देखा गया था।

यह सीरियल २०२० में खत्म हुआ और तब से जेनिफर विंगेट छोटे पर्दे से गायब हैं। हालांकि, अभिनेत्री को कोड एम के सीजन २ में देखा गया था। यह क्राइम ड्रामा वेब सीरीज थी, जो आल्ट बालाजी और जी५ के लिए जगरनाट प्रोडक्शंस द्वारा निर्मित है। इस सीरीज में जेनिफर विंगेट के अलावा रजत कपूर, सीमा बिस्वास और तनुज विरवानी नजर आए थे।

मैच जीतने के बाद कोहली से मिले मैक्सवेल

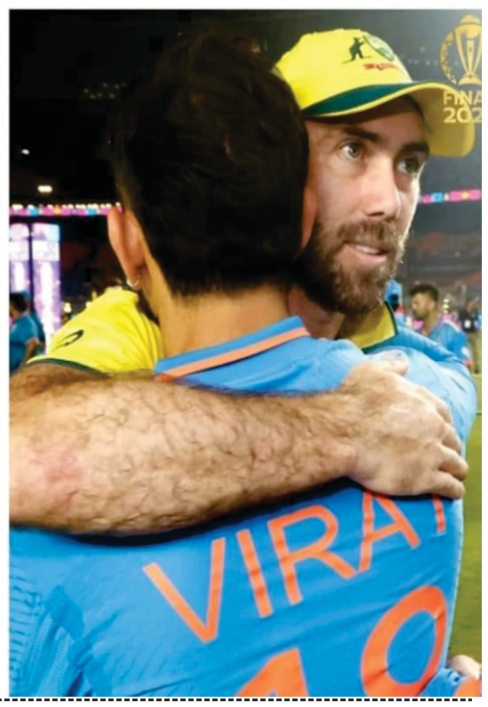

टीम की सफलता के असली हीरो कप्तान रोहित

कीर्तिमानों की जगह टीम को आक्रामक शुरुआत दिलाने का लेते हैं जिम्मा

स्पोर्ट्स डेस्क। भारतीय क्रिकेट टीम विश्व कप के फाइनल में है तो इसके पीछे सर्वाधिक रन बनाने वाले विराट कोहली और सर्वाधिक विकेट लेने वाले तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी के आंकड़े इसकी गवाही देते नजर आ रहे हैं, लेकिन भारतीय कप्तान रोहित शर्मा का योगदान भी अनमोल है। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन की मानें तो भारत के फाइनल में पहुंचने के असली हीरो तो कप्तान रोहित रहे हैं। रोहित जिस अंदाज में तेज शुरुआत दिला रहे हैं उससे टीम अच्छा स्कोर बना पाने में सक्षम हो पाई है। दाएं हाथ के इस विस्फोटक बल्लेबाज की तारीफ में भारत के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर कहते हैं कि रोहित अपने निजी कीर्तिमानों की जगह स्वाभाविक खेल पर फोकस करते हैं। इस विश्व कप में रोहित ने तेजी से रन बटोरने की अपनी स्वाभाविक शैली से खुद जोखिम उठाते हुए कम से कम पांच शतक मिस किए होंगे, लेकिन टीम ने मैच और कप्तान ने करोड़ों दिल जीते हैं।

भारत जब १९ नवंबर को आस्ट्रेलिया के खिलाफ अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में फाइनल खेलने उतरेगा तो रोहित ३६ साल २०३ दिन के होंगे और उनके पास संभवतरू वनडे विश्वकप में जीतने का अंतिम अवसर होगा। पचास ओवरों का अगला विश्वकप २०२७ में होगा। ऐसे में ४० साल की उम्र उनका अगला वनडे विश्वकप खेलना मुश्किल नजर आता है। लगभग साढ़े सोलह साल के उनके करियर में भारत को तीसरी बार विश्व विजेता बनाने के पास उनके पास सुनहरा मौका है।

हिटमैन का रोल शुरू में आकर ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करने की है। अगर उनका बल्ला चलता है तो विपक्षी टीम शुरू में ही दम तोड़ देती है। ऐसा दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ लीग राउंड के मैच और न्यूजीलैंड के खिलाफ सेमीफाइनल समेत कई मैचों में देखने को मिला था। लगभग सभी मैचों में भारत की मजबूत शुरुआत और जीत के पीछे कप्तान रोहित की अहम भूमिका रही है। रोहित की बल्लेबाजी ने अब तक विपक्षी गेंदबाजों को डरा कर रखा है। वह अब तक ५५० रन बनाने में सफल रहे, जो टूर्नामेंट में पांचवां सबसे ज्यादा रन है। रोहित ने यह रन ५५.०० की औसत से बनाए हैं, जबकि उनका स्ट्राइक रेट बाकी भारतीय बल्लेबाजों की तुलना में सबसे ज्यादा (१२४.१५) रहा है। रोहित ने अब तक इस टूर्नामेंट में एक शतक और चार अर्धशतक लगाए हैं। नाबाद १३१ रन इस विश्व कप में उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर रहा है। रोहित अब तक इस विश्व कप में ६२ चौके और २८ छक्के लगा चुके हैं, जो कि फिलहाल टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा है।

सपना देखना का ही नहीं, पूरा करने का जज्बा

उनके बचपन के कोच दिनेश लाड कहते हैं, वह स्कूली दिनों से हमेशा से एक निस्वार्थी कप्तान रहे हैं। आज आप जो यह देख रहे हैं, वो रातों-रात नहीं हुआ। उनका फोकस हमेशा निजी मील के पत्थरों की जगह टीम की जरूरत पर रहता है। २००७ टी-२० विश्व कप जीतने के बाद २००९ और २०११ के बीच वह बेहतर नहीं कर पाए, लेकिन उन्होंने वापसी का वादा किया था और पूरा करके दिखाया। लाड याद करते हैं कि मुझे उनके अंडर-१९ दिनों का एक किस्सा याद आता है। एक बार हम कहीं खड़े थे और सड़क पार एक चमचमाती मर्सिडीज खड़ी थी। तब रोहित ने कहा था, एक दिन मैं ऐसी कार खरीदूंगा। तब वह १७ साल का रहा होगा और उसके बाद तीन साल के अंदर उनके पास लक्जरी कार थी।

विश्व कप में रोहित ने विपक्षी टीमों की बिगाड़ी लय

खिलाफ	रन	गेंद	स्ट्राइक रेट
न्यूजीलैंड	47	29	162.06
नीदरलैंड	61	54	159.37
द. अफ्रीका	40	24	166.66
इंग्लैंड	87	101	86.13
न्यूजीलैंड	46	40	115.00
बांग्लादेश	48	40	120.00
पाकिस्तान	86	63	136.50
अफगानिस्तान	131	84	155.95

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिन:– 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।